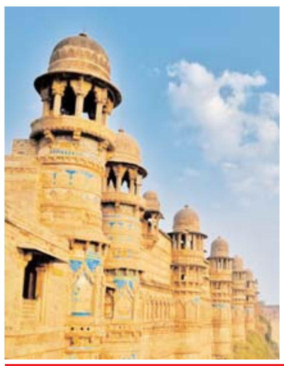

दैनिक
पुष्पांजली टुडे
MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 165 | ग्वालियर,24 फरवरी शनिवार 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

राहुल गांधी की यात्रा में शामिल होंगे कमलनाथ, नकुलनाथ क्या करेंगे?

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनके बेटे नकुलनाथ को लेकर करीब एक हफ्ते से जारी सस्पेंस का पटाक्षेप हो गया है. दरअसल, बीजेपी में जाने की अटकलों के बाद पहली बार आज (23 फरवरी) वरिष्ठ नेता कमलनाथ ने कांग्रेस और राहुल गांधी को लेकर बयान दिए. उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम लोगों से राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने की अपील की. उनके इस पोस्ट को नकुलनाथ ने भी शेयर किया. अब ऐसे में माना जा रहा है कि दोनों ही नेता राहुल गांधी की यात्रा में शिरकत करेंगे. ये यात्रा दो मार्च को मध्य प्रदेश पहुंचेगी.

कमलनाथ ने क्या कहा–कमलनाथ ने एक्स पर लिखा, मध्य प्रदेश की जनता और कांग्रेस के कार्यकर्ता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा की अगवानी के लिए उत्साहित हैं. अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ हम सबके नेता राहुल गांधी पूरे देश में सड़कों पर उतरकर एक निर्णायक लड़ाई का ऐलान कर चुके हैं.उन्होंने कहा, मैं मध्य प्रदेश की जनता

और कांग्रेस के जांबाज़ कार्यकर्ताओं से आग्रह करता हूं कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर राहुल गांधी का संबल और साहस बनें. हम और आप मिलकर अन्याय के ख़िलाफ़ जारी इस महाअभियान को अंजाम तक पहुंचाएंगे.

बीजेपी में जाने की लगाई गई अटकलें–दरअसल, कमलनाथ शनिवार (17 फरवरी) को छिंदवाड़ा दौरा बीच में ही खत्म कर दिल्ली रवाना हो गए थे. इसी दौरान नकुलनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से कांग्रेस के चिह्न हटा लिए.इसी के बाद दोनों नेताओं के बीजेपी में शामिल होने की अटकलें लगाई जाने लगी. इस दौरान मीडिया ने भी कमलनाथ से सवाल किए, लेकिन उन्होंने बीजेपी में जाने की अटकलों को खारिज नहीं किया.हालांकि मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और एमपी कांग्रेस के प्रमुख जीतू पटवारी तमाम अटकलों को खारिज करते रहे. जीतू पटवारी ने कहा कि मेरी कमलनाथ से बात हुई है. वो कांग्रेस में हैं और कांग्रेस में रहेंगे.बता दें कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद पार्टी ने कमलनाथ से प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा ले लिया था. उनकी जगह जीतू पटवारी को जिम्मेदारी दी गई है. नतीजों के बाद से ही माना जा रहा है कि कमलनाथ से पार्टी हाईकमान नराज है. हालांकि अब ये नाराजगी खत्म होती दिख रही है.

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने सुनी फरियादियों की शिकायत, दिए ये खास निर्देश

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने आज (23 फरवरी) को उज्जैन स्मार्ट सिटी कार्यालय स्थित इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया. उन्होंने कमांड एंड कंट्रोल रूम में प्राप्त सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों की जानकारी ली और उनके निराकरण की स्थिति भी देखी. इस दौरान उन्होंने रेंडमली चयन कर सीएम हेल्पलाइन के शिकायतकर्ताओं से दूरभाष पर चर्चा की. इस दौरान एक कॉल आया, उधर से आवाज आई हेलो में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव बोल रहा हूं, आपकी समस्या बताइए.इतना बोलने के बाद मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने सीएम हेल्पलाइन में खुद शिकायतों को सुना और उनका निराकरण भी किया. इस दौरान उज्जैन जिले के विधायक, प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे. मुख्यमंत्री की आवाज सुनकर शिकायतकर्ता भी हतप्रभ रह गए. ग्राम पंचायत अक्याजस्सा निवासी नवीन माथु ने मुख्यमंत्री डॉ यादव को बताया कि उनके पिता

पैरालिसिस की समस्या से पीड़ित हैं. साथ ही बैंक की तरफ से उनका खाता भी बंद कर दिया गया है. जिनसे उन्हें राशि निकालने में समस्या हो रही है.

सीएम मोहन यादव ने दिए निर्देश–मुख्यमंत्री डॉ यादव ने नवीन माथु से कहा कि आपकी समस्या का शीघ्र निराकरण किया जाएगा. मुख्यमंत्री डॉ यादव आवेदक नवीन माथु से स्मार्ट सिटी कार्यालय में मिले और विस्तार से उनकी समस्या के बारे में जानकारी ली. उन्होंने नवीन को एक लाख रुपए की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश जिला प्रशासन को दिए. इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ यादव ने इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल रूम में अन्य विभागों के कार्यों का निरीक्षण किया और कंट्रोल रूम का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए .मुख्यमंत्री डॉ यादव को ग्राम पंचायत अजीमाबाद पारदी निवासी सुनैना ने बताया कि उनकी बेटी को लाडली लक्ष्मी योजना की राशि प्राप्त नहीं हो रही हैं.

खुले में कचरा फेंकने पर नहीं होती कार्रवाई

छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर शहर में बदहाल सफाई व्यवस्था के लिए संबंधित क्षेत्र के जिम्मेदार सुपरवाइजरों के वेतन से अब कटौती होगी. अम्बिकापुर नगर निगम के सामान्य सभा की बैठक में यह निर्णय लिया गया. बैठक में विपक्ष के द्वारा यह आरोप लगाया गया कि नगर निगम में मौजूदा समय में सफाई व्यवस्था बदहाल हो चुकी है. इसके लिए वोट बैंक की राजनीति और सड़क पर कचरा फेंकने वालों को खुली छूट प्रमुख कारण है. विपक्ष ने यह भी आरोप लगाया कि खुले में कचरा फेंकने पर जुर्माना का प्रावधान होने के बावजूद इस ओर न तो कोई कार्रवाई की जा रही है और न ही सख्ती बरती जा रही है.

अवैध नल कनेक्शन वैध नहीं कराया तो देना पड़ेगा भारी ज़ुर्माना, इंदौर नगर निगम दिया इतने दिन का समय

यदि आपके पास अवैध नल कनेक्शन है और आपने अभी तक इसे वैध करने की प्रक्रिया शुरू नहीं की है, तो जल्दी यह कार्रवाई कीजिए. इंदौर नगर निगम ने 7 मार्च से अवैध नल कनेक्शन को वैध करने के लिए दोगुना शुल्क वसूलने जा रहा है. आईएमसी अवैध आवासीय नल जल कनेक्शन को वैध करने के लिए अभी 6,000 रुपये प्रति कनेक्शन और बस्तियों में 2,500 रुपये प्रति कनेक्शन शुल्क लिया जा रहा है. अवैध कनेक्शनों से निपटने के लिए आईएमसी ने जल कनेक्शनों को वैध करने की मुहिम तेज कर दी है.

10,900 जल कनेक्शन पहले ही वैध – जल कार्य प्रभारी अभिषेक बब्लू शर्मा ने बताया कि हमनें 10,900 जल कनेक्शन पहले ही वैध कर दिए गए हैं, जिससे 3.50 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है. वहीं 6 मार्च को अभियान खत्म होने से पहले निगम

टारगेट पूरा कर लेना चाहता है. इंदौर नगर निगम ने अब अवैध करने वाले प्लंबरों के रजिस्ट्रेशन रद्द करने, सुरक्षा निधि जब्त करने और पुलिस में एफआईआर दर्ज करने का फैसला भी लिया है. साथ ही दूषित पानी की समस्या वाले इलाकों में नई पाइपलाइन बिछाने के लिए 28 फरवरी तक प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश जारी किया गया है.

गर्मी में टैंकर की होगी व्यवस्था–आईएमसी ने गर्मी में पानी की कमी को देखते हुए टैंकर्स की व्यवस्था भी करने को कहा है. समीक्षा बैठक में गर्मी के महीनों के दौरान टैंकरों पर निर्भरता कम करने के लिए नर्मदा और यशवंत सागर से पाइपलाइनों के माध्यम से पानी उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया. वहीं जिन स्थानों पर नई पाइपलाइनें बिछाई गई है, वहां अब पुरानी लाइनों को बंद कर दिया गया है. बता दें कि, इंदौर नगर निगम सालाना पानी की आपूर्ति पर लगभग 427 करोड़ रुपये खर्च करता है. वहीं पानी से नगर निगम को केवल 80 करोड़ रुपये की आय होती है

सीएम मोहन यादव ने बताई संत उमेश नाथ के सांसद बनने तक की पूरी रोचक कहानी

उज्जैन के वाल्मिकी धाम आश्रम के प्रमुख बाल योगी संत उमेश नाथ जी महाराज को बीजेपी ने मध्य प्रदेश से राज्यसभा उम्मीदवार बनाया. मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने बाल योगी संत उमेश नाथ महाराज के संत से राज्यसभा सांसद बनने की पूरी कहानी मंच से सुनाई. यह सुनकर मौके पर मौजूद लोग भी हतप्रभ रह गए. मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने खुद का उदाहरण देकर पूरे वाक्ये की शुरुआत की.बीजेपी ने बीते दिनों जैसे ही उज्जैन के संत बाल योगी उमेश नाथ महाराज का नाम राज्यसभा के उम्मीदवार के रूप में एलान किया, वैसे ही उनके अनुयायियों के साथ-साथ आम लोग भी चकित रह गए. अभी राज्यसभा सांसद के लिए वोटिंग होना बाकी है, मगर सर्वसम्मति से उमेश नाथ महाराज निर्विरोध राज्यसभा सांसद चुन लिया गया है. उनका उज्जैन के बीजेपी कार्यालय पर अभिनंदन भी किया गया. इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने संत उमेश नाथ महाराज के राज्यसभा सांसद बनने की पूरी कहानी बताई.

राज्यसभा एमपी चयन की सीएम ने सुनाई कहानी–मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हाई कमान ने नाम मांगे थे. उन्होंने संत उमेश नाथ महाराज का नाम दे दिया. इसके बाद उनका नाम चयन प्रक्रिया के क्वार्टर फाइनल से सेमीफाइनल में होते हुए फाइनल तक पहुंच गया. जब उनके नाम पर अंतिम मोहर लगनी बाकी है, उसी समय मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को ध्यान आया कि उन्होंने उमेश नाथ महाराज से इस बारे में चर्चा नहीं की है. इसके बाद उन्होंने उमेश नाथ महाराज से बातचीत की तो वह राजनीति के क्षेत्र में अपनी सेवा देने के लिए लिए तैयार हो गए. इस प्रकार राज्यसभा सांसद तक उनका पूरा सफर रहा.

सीहोर लोकसभा सीट पर बीजेपी का है कब्जा, कांग्रेस को फिर मिलेगी चुनौती?

लोकसभा सीटों के मामले में राजधानी भोपाल का नजदीकी जिले की चार विधानसभा सीटें, तीन लोकसभा सीटों में समाहित हैं. इन लोकसभा सीटों में भोपाल-देवास और विदिशा संसदीय सीट शामिल है. देवास संसदीय क्षेत्र में जिले की आष्टा विधानसभा आती है, जबकि विदिशा में इछावर-बुदनी और भोपाल लोकसभा क्षेत्र में सीहोर विधानसभा समाहित है. हाल ही में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों के बाद अब लोकसभा चुनाव की तैयारियां शुरू हो गई हैं.राजधानी भोपाल के नजदीकी जिले सीहोर की चार विधानसभा सीटों के मतदाता प्रदेश की तीन संसदीय सीटों के लिए मतदान करते हैं. प्रदेश की विदिशा संसदीय सीट के लिए सीहोर जिले के इछावर-बुदनी के मतदाता मतदान करते हैं, जबकि भोपाल संसदीय सीट के लिए सीहोर विधानसभा और देवास संसदीय सीट के लिए आष्टा विधानसभा के मतदाता वोटिंग करते हैं. 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में तीनों ही सीटों पर बीजेपी ने परमच लहाराया था. वर्ष 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में विदिशा-देवास और भोपाल लोकसभा सीटों से बीजेपी के उम्मीदवार विजयी हुए थे.

10 लाख से अधिक हैं मतदाता –भोपाल सीट से जहां साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने प्रतिद्वंदी प्रत्याशी दिग्विजय सिंह को चुनाव हराया था, जबकि विदिशा से रमाकांत भार्गव और देवास से महेंद्र सिंह सोलंकी विजयी हुए थे. भोपाल लोकसभा सीट से साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर 3 लाख से अधिक वोटों से जीती थीं,

यूपी के बरेली में दर्दनाक हादसा, झोपड़ी में आग लगने से चार बच्चियों की जिंदा जलकर मौत

उत्तर प्रदेश के बरेली में दर्दनाक हादसे में 4 मासूम बच्चियों की जिंदा जलकर मौत हो गई. खेलते समय बच्चियां एक झोपड़ी खेल रहीं थीं और इस दौरान झोपड़ी में आग लग गई है. इस हादसे में तीन बच्चियों की मौके पर मौत हो गई जबकि एक बच्ची को अस्पताल में मौत हुई है. वहीं घटना की जानकारी होते ही डीएम, एसएसपी, एसपी साउथ समेत स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच

गई हैं. पुलिस मामले की छानबीन कर रही है.फरीदपुर थाना क्षेत्र के नवादा बिलसंडी गांव में एक झोपड़ी में भीषण आग लग गई. देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और झोपड़ी में मौजूद 4 बच्चियां बुरी तरह जल गई. जिनमें से 3 बच्चियों की मौके पर ही जलने से मौत हो गई जबकि एक बच्ची की अस्पताल में मौत हुई. वहीं मौके पर पहुंचे जिलाधिकारी रविंद्र कुमार ने बताया कि फरीदपुर थाना क्षेत्र के नवादा बिलसंडी गांव में में दर्दनाक हादसा हुआ है. आग कैसे लगी इसकी पुलिस जांच कर रही है, उन्होंने कहा कि घायल बच्ची का इलाज कराया जा रहा है और परिवार को आर्थिक सहायता भी की जाएगी.दरअसल एक कच्चे घर में छत पर पुआल रखा हुआ था जिसमे अचानक आग लग गई. वहीं कुछ बच्चे उस कच्चे घर में छिपन-छिपाई खेल रहे थे

अंबिकापुर में सोनोग्राफी का इंतजार कर रही महिला की करवानी पड़ी डिलीवरी, मृत बच्चे को दिया जन्म

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला मुख्यालय के अम्बिकापुर स्थित मेडिकल कॉलेज अस्पताल के एमसीएच में एक गर्भवती महिला सोनोग्राफी की जांच कराने पहुंची थी. इस महिला को सोनोग्राफी जांच के लिए शंकरगढ़ अस्पताल से रेफर किया गया था. नौ माह की गर्भवती महिला को सोनोग्राफी जांच के लिए अस्पताल की लाइन में एक घंटे का इंतजार मंहगा पड़

अभी से दिल्ली में तपने लगा सूरज, – कब होगी बारिश?

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मौसम में उतार चढ़ाव का सिलसिला जारी है. एक तरफ लोगों को सुबह और देर शाम के समय ठंड का अहसास होता है, तो दूसरी तरफ दिन के समय लोगों को गर्मी लगती है. दिल्ली वालों के लिए शुक्रवार सुबह के समय गुरुवार की तुलना में ज्यादा ठंड का अहसास कराने वाला साबित हुआ. मौसम विभाग के अनुसार शुक्रवार को भी दिन का तापमान ञ्जद्दद्धमौसम विभाग में मुताबिक शुक्रवार को दिल्ली एनसीआर में मौसम साफ रहेगा. धूप खिलने की वजह से लोगों को दिन के समय गर्मी का अहसास हो सकता है. दिन का न्यूनतम तापमान 9 डिग्री रहने का अनुमान है. जबकि अधिकतम तापमान 27 डिग्री रहने का पूर्वानुमान है. शुक्रवार को बूंदाबांदी और बादल छाने के आसार नहीं

सात साल बाद उसी ध्रुव पर यूपी की राजनीति, कितना कमाल कर पाएगी अखिलेश-राहुल की जोड़ी

राहुल गांधी की न्याय यात्रा उत्तर प्रदेश में है. यात्रा रायबरेली पहुंची, लेकिन तब अखिलेश यादव वहां यात्रा में शामिल नहीं हुए. जब यात्रा बिहार में थी तब तेजस्वी यादव ने उस जीप की ड्राइविंग सीट संभाली थी, जिस पर राहुल सवार हुए थे, ऐसा यूपी में नहीं हुआ. अखिलेश यादव ने कहा था कि जब तक सीटों पर बात नहीं बनती है तब तक ड्राइविंग सीट नहीं संभालूंगा. अब बात बन गई है और सपा ने कांग्रेस के लिए 17 सीटें छोड़ी है, इस बात की घोषणा भी हो चुकी है. यूपी में अब इंडिया गठबंधन की बात बनती दिख रही है और अब अखिलेश ने यह बयान भी दे दिया है कि वह केवल यात्रा में शामिल ही नहीं होंगे, बल्कि सपा ने कुछ और भी बड़ा सोच रखा है.

कांग्रेस और सपा के बीच तस्वीर साफ–जिस दिन अखिलेश यादव को रायबरेली में न्याय यात्रा में शामिल होना था और उसके पहले उन्होंने बयान दिया कि जब तब कांग्रेस सीटों पर फैसला नहीं करेगी, गठबंधन पर फैसला नहीं करेगी, तब तक यात्रा में शामिल नहीं होंगे. उसके बाद से दबाव बहुत अधिक बढ़ गया. यह भी चर्चा होने लगी कि यूपी में इंडिया गठबंधन टूट सकता है और दूसरी तरफ अखिलेश यादव भी अपनी पार्टी में घिरे हुए थे क्योंकि उनकी पार्टी से स्वामी प्रसाद मौर्य ने इस्तीफा दिया था, पार्टी के अंदर असंतोष था, पल्लवी पटेल के तेवर भी बहुत तीखे थे, कांग्रेस के ऊपर बहुत दबाव था. दोनों दबाव मिले और उसके अगले दिन मल्लिकार्जुन खड़गे ने अखिलेश यादव से बात की. बातचीत में मल्लिकार्जुन खड़गे ने अखिलेश यादव से कहा कि एक से ढ़ेड घंटे के भीतर इस मामले का हल हो जाना चाहिए. उत्तर प्रदेश में सीटों को लेकर कांग्रेस की इकाई कुछ सीटों को लेकर काफी संजीदा थी.उनकी जिद ये थी कि मुरादाबाद और संभल की सीटें उनको चाहिए. जबकि अखिलेश यादव के पास दोनों सिटींग एमपी सीटें है, इतना ही नहीं दोनों सीटों की नुमाइंदगी मुस्लिम सांसदों की है. कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच सीटों को लेकर लड़ाई हो सकती है उसे लेकर भी काफी सचेत थे. बातचीत का सिलसिला तेज हुआ और 12 बजते ही दोनों दल इस फैसले पर पहुंचे कि

समझौता हो गया है, सीटों के ऊपर भी बात हुई , तीन बजते-बजते तस्वीर साफ हो गई.

कुछ बड़ा करने की है योजना–अखिलेश यादव हालांकि तब लखनऊ में नहीं थे, जब समझौता हुआ लेकिन उत्तर प्रदेश के सपा के अध्यक्ष और कांग्रेस-अध्यक्ष के बीच जब प्रेस कांफ्रेस हो गई तब तस्वीर पूरी तरह से बदल गई. वो पल ऐसा था कि सपा के भीतर जो बगावत के सुर उभर रहे थे, सहयोगियों के बगावत के सुर उभर रहे थे, उसे उन्होंने ठंडा कर दिया. ये अखिलेश यादव के साथ-साथ कांग्रेस के लिए भी आवश्यक था. गुरुवार (22 फरवरी) को अखिलेश यादव को यात्रा में शामिल होने के लिए निमंत्रण देकर बकायदा कांग्रेस का शीर्ष सपा के दफ्तर गया, समारोह पूर्वक निमंत्रण दिया गया.अखिलेश यादव ने कहा कि अब हम न सिर्फ यात्रा में शामिल होंगे बल्कि हम कुछ और बड़ा प्लान कर रहें है. इसका अर्थ यह हुआ कि कांग्रेस और सपा के बीच जो हिचकिचाहट थी वो अब दूर हो चुकी है. ये यात्रा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है और ये यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण है

जनपद अम्बेडकरनगर थाना मालीपुर पुलिस टीम द्वारा 01 अभियुक्त को 1100 ग्राम नाजायज गांजा के साथ किया गिरफ्तार

अंबेडकर नगर से ब्यूरो चीफ रामदयाल गौतम

श्रीमान् पुलिस अधीक्षक अम्बेडकरनगर महोदय डॉ0 कौस्तुभ द्वारा अपराध तथा अपराधियो पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने के लिये चलाये जा रहे अभियान के क्रम में श्रीमान् अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण महोदय तथा क्षेत्राधिकारी जलालपुर महोदय के कुशल पर्वेक्षण में, श्रीमती प्रिंयका पाण्डेय थानाध्यक्ष के नेतृत्व में दिनांक 22.02.2024 को समय 19.45 बजे दौराने भ्रमण उ0नि0 हवलदार सिंह यादव द्वारा महारानी गीता देवी स्कूल के पास ग्राम करीमपुर से एक व्यक्ति जिसका नाम अशोक वर्मा पुत्र स्व0 हरिशंकर वर्मा निवासी ग्राम मंसूरपुर थाना मालीपुर जनपद अम्बेडकरनगर है को 01 चद्द 100 द्द्व नजायज गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तार अभियुक्त अशोक वर्मा उपरोक्त के विरुद्ध थाना स्थानीय पर मु0अ0स0 36/2024 धारा 8/20 हृष्ठक्क-ष्ट्ठ पंजीकृत कर मा0 न्यायालय भेजा गया ।

गिरफ्तार अभियुक्त का **विवरण–**

1. अशोक वर्मा पुत्र स्व0 हरिशंकर वर्मा निवासी ग्राम मंसूरपुर थाना मालीपुर जनपद अम्बेडकरनगर उम्र करीब 35 वर्ष

आपराधिक इतिहास–

1. मु0अ0स0 36/2024 धारा 8/20 हृष्ठक्क-ष्ट्ठ थाना मालीपुर जनपद अम्बेडकरनगर
2. मु0अ0सं0 103/22 धारा 8/21 हृष्ठक्क-ष्ट्ठ थाना मालीपुर जनपद अम्बेडकरनगर

बरामदगी विवरण –

1. 01 100 नजायज गांजा

गिरफ्तार कर्ता टीम का विवरण--

1. उ0नि0 हवलदार सिंह यादव
3. हे0का0 मो0 रसूल
3. हे0का0 विनोद प्रचेता

विधायक उमाकांत शर्मा ने नागरिकों से की भेंट सुनी समस्याए एवं किया समाधान

सिरोंज
अभिषेक कुशवाह

शुक्रवार दोपहर के क्षेत्रीय विधायक उमाकांत शर्मा ने अपने स्व निवास पर क्षेत्र के नागरिको एवं कार्यकर्ताओ से भेंट कर उनकी समस्याए सुनी जिनमें कुछ समस्याओ का समाधान तो मौके पर किया गया तथा शेष के लिये शीघ्र समाधान के लिये आश्वासन दिया गया वही ज्ञात हो की विधायक उमाकांत शर्मा जनता की समस्याओं के निवारण हेतु इसी प्रकार भेट कर जनता की समस्याओं सुनकर उनकी समस्यायो का समाधान करते हैं इस दौरान बडी संख्या में नागरिक गण एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहें ।

कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न दिये जाने सेन समाज ने दिया आभार पत्र–बीते दिनो भारत सरकार के द्वारा बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था इसी को लेकर सर्व सेन समाज युवासंगठन के द्वारा विधायक उमाकांत शर्मा को आभार पत्र दिया गया जिसमें उन्होने बताया कि नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के द्वारा कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न दिया गया है जिससे पूरे सेन समाज में हर्ष का माहौल व्याप्त है इसी लेकर हम देश के प्रधान मंत्री तथा भारत सरकार का आभार व्यक्त करते है इस दौरान सेन समाज के अध्यक्ष देशराज सेन , दिनेश सेन , गोलू सेन , विकास सेन , राहुल सेन , नीरज सेन , बलराम सेन , ब्रजेश सेन , रूप सिंह सेन , आदि सेन समाज के कार्यकर्ता उपस्थित रहें

विधायक उमाकांत शर्मा ने रात्रि में किया नगर का भ्रमण देखी पुलिस की व्यवस्थायें

सिरोंज –
अभिषेक कुशवाह

विधायक उमाकांत शर्मा अपनी सक्रिय शैली एवं क्षेत्र की जनता की प्रति सदैव तत्परता के रूप में जाने जाते है इसी क्रम गुरूवार की रात्रि लगभग 02:00 बजें नगर का भ्रमण किया जिसमें पुलिस की व्यवस्थाओ संबधी जायजा लिया एवं थाना प्रभारी को वस्तु स्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि सर्राफा बाजार में आपके दो व्यक्ति है लेकिन शस्त्रयुक्त नही है जो कि चिंता विषय है पुलिस चौकी भी खाली पडी है , जो पुलिस चौकी क्षत्री नाका के पास है वहां एक सर्विस गाडी 100 डायल खडी हुई है लेकिन उसके तीन ड्रायवर अंदर आराम कर रहे है जिससे कि पुलिस की शिथिलता नजर आती है स्टॉफ कम है उसी में हमें काम चलाना है हालांकि पुलिस के जो अधिकारी ईमानदारी और अच्छे से ड्यूटी दे रहे उनके लिये विधायक उमाकांत शर्मा ने धन्यवाद भी दिया ।

मेला देखने आए मासूम की ट्रैक्टर की चपेट में आकर मौत

मिर्जापुर (शाहजहांपुर)। दादी और ताऊ के साथ ढाईघाट मेला देखने आए ढाई साल के मासूम की ट्रैक्टर-ट्रॉली की चपेट में आकर मौत हो गई। कस्बे के मुख्य चौराहे पर रहने। वाले अंकुश गुप्ता की वहीं पर मिठाई की दुकान भी है। उनका ढाई साल का इकलौते बेटा रमन उर्फ लड्डू ताऊ रविनेश गुप्ता और दादी माँ के साथ रविवार को ढाईघाट मेला देखने आया था। घाट पर परिवार के लोगों ने भंडारे का आयोजन यन किया था, जिसमें प्रसाद ग्रहण करने के बाद रमन को बाइक पर बैठाकर रविनेश मेला घुमाने लगे। पुल के पास गेंद की दुकान देखकर रमन ने उसे लेने की जिद की। इस पर रविनेश नै पुल के पास बाइक रोककर खड़ी कर ली

गॉव चलो अभियान के तह्त ग्राम आमाढाना पहुंचे विधायक उमाकांत शर्मा

सिरोंज । गॉव चलो अभियान में विधायक उमाकांत शर्मा पूरी सक्रियता के साथ ग्राम ग्राम पहुंच कर ग्राम स्तरीय सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियो में सहभागी हो रहे है , एवं लगातार ग्रामो का दौरा कर रहें है इसी क्रम में गुरूवार को श्री शर्मा नगर से कुछ ही किलोमीटर दूर स्थित ग्राम आमाढाना पहुंचे जहां माँ जगदंबा की प्राण प्रतिष्ठा के समापन अवसर पर शामिल हुए एवं महंत संजय बाबा का स्वागत किया साथ ही क्षेत्र की खुषहाली , प्रगति , उन्नति हेतू आषीर्वाद लिया साथ ही सहभोज मे भी शामिल हुए।

जिला पंचायत सीईओ मनरेगा फंड में हुए भ्रष्टाचार पर कार्रवाई करने में अक्षम साबित हो रहे

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। जिले के मेहगांव जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत खेरिया सिंध के ग्राम रोजगार सहायक सत्येंद्र सिंह द्वारा राष्ट्रीय निधि (मनरेगा फंड) से रुपए की अवैध तरीके से निकासी किये जाने की शिकायत महेंद्र सिंह नें पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मध्य प्रदेश शासन भोपाल से दिनांक 21/08/2023 को की थी । महेंद्र सिंह की शिकायत पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के आयुक्त नें भिंड जिला पंचायत सीईओ को मनरेगा फंड से अवैध तरीके से रुपये निकासी किये जाने पर कार्रवाई

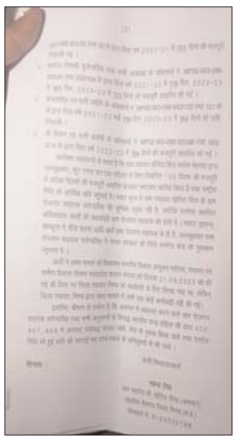

करने के निर्देश दिए थे,उक्त शिकायत में जिला पंचायत सीईओ का ढुलमुल रवैया होने के कारण दिनांक 23/02/2024 तक कोई कार्रवाई नहीं हुई जिससे प्रतीत होता है सरकारी फंड की लूट में कार्रवाई करने में जिला पंचायत सीईओ पूरी तरह अक्षम साबित हो रहे हैं ।

पीड़ितों ने बताया कि ग्राम सिंध खेरिया निवासी - मुकेश एवं पत्नी सीमा,बछरेटा निवासी बृजेंद्र सिंह एवं पत्नी आकांक्षा,कोमल सिंह एवं पत्नी ज्योति,किशन सिंह एवं पत्नी संतोषी के जॉबकार्ड से भ्रष्टाचार कर मनरेगा फण्ड की राशि निकाली गई।

आई टी- सोशल मीडिया के क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का विधायक उमाकांत शर्मा ने किया सम्मान

अभिषेक कुशवाह

सिरोंज।गुरुवार देर शाम को विधायक उमाकांत शर्मा ने भारतीय जनता पार्टी संगठन में विगत अनेक वर्षों से सक्रिय रहकर मीडिया,सोशल मीडिया,आईटी विभाग में काम कर रहे कार्यकर्ताओ का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान उन्होंने विगत विधानसभा चुनाव में सक्रिय रहकर आधुनिक संचार तकनीक का उपयोग कर भाजपा की विजय में महत्वपूर्ण योगदान देने एवं जिम्मेदारी से दायित्व का निर्वहन करने के लिए भी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। भाजपा संगठन को प्रभावी बनाने एवं नए नोजवानों को पार्टी संगठन की रीति नीति से जोड़कर उन्हें उनकी क्षमता के योग्य कार्य देकर कुशल कार्यकर्ता बनाने वाले संगठन शिल्पी उमाकांत शर्मा सदैव नए नवाचार करने के लिए भी जाने जाते है। गुरुवार शाम को स्थानीय विश्राम गृह में उन्होंने सिरोंज नगर मंडल,देवपुर एवं चितावर मंडल में मीडिया,सोशल मीडिया और आईटी से जुड़े कार्यकर्ताओं को अल्प सूचना पर एकत्रित कर भाजपा संगठन में उक्त क्षेत्र में सक्रिय

एवं समर्पित भाव से काम करने के लिए केशरिया शाल,पटका एवं माला पहनाकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए भाजपा संगठन, देश की केंद्र सरकार में विश्व के सर्वश्रेष्ठ नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात, विचार,जनकल्याणकारी योजनाओं को विधानसभा के प्रत्येक घर घर मे पहुँचाकर आम नागरिक परिवारों को भारतीय जनता पार्टी संगठन को ओर अधिक शसक्त बनाने के लिए उपस्थित कार्यकर्ताओ के विचारों एवं सुझावों को भी जाना। उन्होंने नमो एप के माध्यम से ब्रांड एम्बेसडर बनकर अधिक से अधिक युवाओं को जोड़ने का भी लक्ष्य कार्यकर्ताओं को दिया। उन्होंने कहा कि आगमो लोकसभा चुनाव न केवल देश दृष्टि से बल्कि आगामी 2047 तक के लक्ष्य को लेकर महत्वपूर्ण है। नरेंद्र मोदी आने वाले एक हजार सालों तक भारत देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की योजना पर काम कर रहें है। हमें अब तीसरी बार कांग्रेस मुक्त अभियान करते हुए पूर्ण बहुमत की सरकार को देश मे स्थापित करने के लिए काम करना है। इस दौरान वरिष्ठ भाजपा नेता हरिबाबू भार्गव एवं नगर मंडल अध्यक्ष पारस तारण मीडिया प्रभारी सचिन शर्मा, आईटी सेल प्रभारी आकाश जैन नवनीत जैन, सोशल मीडिया प्रभारी सोनू ड्यानी, सहमीडिया प्रभारी मनीष चौरसिया, संदीप शर्मा,अमित त्यागी,शिवराज यादव,अभिषेक कुशवाह सहित तीनों मंडलो के आईटी एवं सोशल मीडिया क्षेत्र से जुड़े कार्यकर्ताबन्धु उपस्थित रहे।

जिले की मदिरा दुकानों का निष्पादन नवीनीकरण लॉटरी के माध्यम से किया

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

जिले की मदिरा दुकानों का निष्पादन नवीनीकरण/लॉटरी के माध्यम से आज 23 फरवरी 2024 को किया गया। जिला आबकारी अधिकारी श्री अभिषेक तिवारी ने बताया कि जिले में कुल 83 मदिरा दुकानें 19 मदिरा समूहों में विभाजित है। जिनका कुल आरक्षित मूल्य 2791124938 रुपए हैं। जिनमें से 14 मदिरा समूहों द्वारा 15 प्रतिशत मूल्यवृद्धि के साथ नवीनीकरण कराया गया एवं नान्द्रा मदिरा समूह का निष्पादन लॉटरी के माध्यम से किया गया। इस प्रकार नवीनीकरण एवं लॉटरी के माध्यम से कुल आरक्षित मूल्य का 84.68 प्रतिशत रूपये 2363502751 रुपए का निष्पादन सम्पन्न हुआ।आबकारी अधिकारी श्री तिवारी ने बताया कि शेष 15.32 प्रतिशत 427622187 रुपए के कुल चार मदिरा समूहों की 17 मदिरा दुकानों का निष्पादन ई-टेण्डर के माध्यम से किया जाना है। जिसके लिए 27 फरवरी से 04 मार्च 2024 तक ई-टेण्डर डाले जा सकेंगे।

खाद्य प्रतिष्ठानों से दूध, घी, मावा सहित अन्य खाद्य पदार्थों के लिए नमूने

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

आमजन को शुद्ध एवं मिलावट रहित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा के निर्देश पर खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा निरंतर कार्यवाही की जा रही है। इसी क?ी में आज 23 फरवरी को खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों से दुध एवं दुग्ध से बने अन्य खाद्य पदार्थों के प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण कर नमूने संग्रहित किये है। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने महाकाल नमकीन कसरावद से सेंव, पाम तेल, बेसन, एवं काला नमक का, महावीर नमकीन कसरावद से पाम तेल, नमकीन, आजवाईन का, महावीर नमकीन महेश्वर से खाद्य पदार्थ पाम तेल, सेव मिक्चर, साबुदाना, फलहारी, चनादाल, मुंगफली, मसाला, मिर्च पाउडर, जीरावन, जीरा, आजवाईन एव सेव की मिर्ची का, वी. एण्ड वी. फुड उद्योग नान्द्रा से हल्दी पाउडर, मिर्च पाउडर, मसाला, धनिया पाउडर का, प्रेम मसाला पिपलिया से मिर्च पाउडर एवं हल्दी पाउडर का तथा महाकाल मिल्क कलेक्शन सेन्टर करही से खाद्य पदार्थ दूध, घी एवं मावा का नमूना संग्रहित किया है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री एचएल आवास्या ने बताया कि 06 प्रतिष्ठानों से लिए गए नमूने जॉच हेतु राज्य खाद्य परिक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे गये है। जॉच उपरांत संबंधित विक्रेताओं के विरूद्ध खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के तहत वैद्यानिक कार्यवाही की जाएगी। आगामी समय में समस्त जगह विशेष अभियान चलाकर दुध एवं दूग्ध से बने एवं अन्य खाद्य प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण कर विधिवत कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

आरटीई के तहत अशासकीय स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश के लिये समय-सारणी जारी

23 फरवरी से शुरू होंगे ऑनलाइन आवेदन जमा

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिये शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत गैर-अनुदान मान्यता प्राप्त अशासकीय स्कूलों में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह के बच्चों के ऑनलाइन निरूशुल्क प्रवेश के लिये समय-सारणी जारी की गई है। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री धनराजू एस ने बताया कि 23 फरवरी से 3 मार्च, 2024 ठ/ह्ह्ह्र पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन लिये जायेंगे। पोर्टल पर त्रुटि सुधार के लिये विकल्प उपलब्ध रहेगा। ऑनलाइन आवेदन के बाद आवेदक 24 फरवरी से 5 मार्च तक पावती डाउनलोड और मूल दस्तावेजों का केन्द्रों में सत्यापन करा सकेंगे।आरटीई के तहत 7 मार्च, 2024 को पारदर्शी रेण्डम पद्धति से ऑनलाइन लॉटरी आयोजित करते हुए आवेदकों को स्कूल आवंटित किया जायेगा। आवेदकों को एसएमएस से भी सूचित किया जायेगा। लॉटरी में चयनित आवेदक 11 मार्च से 19 मार्च, 2024 तक आवंटन-पत्र डाउनलोड कर आवंटित स्कूल में प्रवेश पा सकेंगे। प्रवेश लेते समय ही संबंधित प्रायवेट स्कूल द्वारा मोबाइल एप के माध्यम से एडमिशन रिपोर्ट भी दर्ज की जायेगी।प्रथम चरण की प्रक्रिया समाप्त होते ही द्वितीय चरण में प्रवेश के लिये प्रक्रिया शुरू की जायेगी। पोर्टल पर 21 मार्च, 2024 को रिक्त सीटों को प्रदर्शित किया जायेगा। द्वितीय चरण में 22 से 26 मार्च तक स्कूलों की च्वाइस अपडेट की जा सकेगी। द्वितीय चरण की ऑनलाइन लॉटरी 28 मार्च को होगी और स्कूलों का आवंटन किया जायेगा। द्वितीय चरण में लॉटरी से चयनित आवेदक 30 मार्च से 5 अप्रैल, 2024 के बीच आवंटन-पत्र डाउनलोड कर आवंटित स्कूल में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। राज्य शिक्षा केन्द्र ने सभी जिला कलेक्टर्स को नियमानुसार पूर्ण पारदर्शी तरीके से नियत समय में यह कार्य सम्पादित किये

शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करने में सहायक है सहजयोग

सहजयोग ध्यानपद्धति मानवीय सूक्ष्म तंत्र पर आधारित है। हमारा बाह्य शरीर पंचज्ञानेन्द्रियों और कर्मेंद्रियों से बना है, उसी प्रकार हमारा सूक्ष्म शरीर 72,000 नस नाड़ियों से बना हुआ है। सहजयोग ध्यान हमें हमारे सूक्ष्म शरीर को संतुलित करने की कला सिखाता है। हम हमारे जीवन में बहुत सारी शारिरिक - आधि-व्याधियों का सामना करते हैं। आज के सहजयोग लेख में हम कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में जानेंगे। जैसे कि एसिडिटी केवल गलत खानपान से नहीं होती, अपितु इसका - मुख्य कारण तनाव है। उच्च रक्तचाप केवल ज्यादा नमक खाने से नहीं होता, अपितु अपनी भावनाओं को नियंत्रित न कर पाना इसका मुख्य कारण है। कोलेस्ट्रोल सिर्फ तले हुए या अधिक घी युक्त भोजन से ही नही ब?ता, अपितु इसका मुख्य कारण आलसी होना है। अस्थमा केवल फेफड़ों में ऑक्सीजन की सप्लाई की कमी से ही नहीं होता, बल्कि हमारा निराशावादी दृष्टिकोण आमतौर पर इसके लिये जिम्मेदार होता है। मधुमेह या शुगर की बीमारी ज्यादा मीठा खाने से नहीं होती वरन् हमारा अड़ियल आचरण पैंक्रियाज के सुचारू काम में बाधा डालता है। इस प्रकार हमारे रोगों का मुख्य कारण हमारा विचलित चित्त है। अधिकांश रोग हमारी मानसिक स्थिति ठीक न होने के कारण होते हैं। हममें निराशावादी दृष्टिकोण, अशुद्ध इच्छाएं, आलसपन, इनफीरियरटी उत्पन्न करने वाली हमारी इड़ा नाड़ी है। इस नाड़ी को संतुलित कर हम कोलेस्ट्रॉल, अस्थमा सायकोसोमेटिक बीमारियां, निम्न रक्तचाप, निम्न शुगर आदि अनेक बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं। उसी प्रकार उच्च रक्तचाप, उच्चमधुमेह, हृदयाघात आदि रोगों से छुटकारा पाने के लिये हमें हमारी पिंगला नाड़ी को संतुलित करना होगा।यह सुंदर संतुलन सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार के बाद हर दिन के केवल दस मिनट ध्यान से कोई भी पा सकता है। आप भी यदि अपनी शारिरिक आधि-व्याधियों से छुटकारा पाकर आध्यात्मिक जीवन की ओर अग्रसर होना है, तो, श्री माताजी निर्मला देवी जी द्वारा प्रतिस्थापित सहजयोग का अनुभव अवश्य प्राप्त करें।अधिक जानकारी के लिए टोल फ्री नंबर 18002700800 पर कॉल कर सकते हैं या वेबसाइट पर देख सकते हैं। सहजयोग पूर्णतया निःशुल्क ध्यान पद्धति है।

सतना नगर निगम के पार्षद के स्वास्थ्य का हाल चाल जानने पहुंचे उप मुख्यमंत्री

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।.
उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने संजय गांधी अस्पताल पहुंचकर उपचार हेतु भर्ती सतना नगर निगम के पार्षद महेन्द्र कुमार पाण्डेय का हालचाल जाना तथा चिकित्सकों को समुचित उपचार सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिये।

उप मुख्यमंत्री दो दिवसीय संभागीय कैंसर शिविर का आज करेंगे शुभारंभ

मुख और स्तन कैंसर के हजारों संभावित रोगियों को मिलेगी नि:शुल्क उपचार सुविधा

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।. प्रशासन तथा इंदौर कैंसर फाउण्डेशन द्वारा रीवा में 24 एवं 25 फरवरी को संभागीय कैंसर शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में रीवा संभाग के सभी जिलों के मुख कैंसर और स्तन कैंसर के हजारों संभावित रोगियों को जाँच और उपचार की नि-शुल्क सुविधा मिलेगी। शिविर 24 फरवरी को कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम में प्रात- 10 बजे से आरंभ होगा। उप मुख्यमंत्री तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल प्रात- 11 बजे कैंसर शिविर का विधिवत शुभारंभ करेंगे। शिविर में इंदौर कैंसर फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ दिग्पाल धारकर कैंसर रोग के प्रारंभिक लक्षणों की पहचान तथा उपचार के संबंध में विस्तार से जानकारी देंगे। कैंसर शिविर में 24 फरवरी को रीवा, मऊगंज तथा सीधी जिले के रोगियों एवं 25 फरवरी को सतना, मैहर एवं सिंगरौली जिले के रोगियों की जाँच की जाएगी। रोगियों की जाँच एवं उपचार के लिए विशेषज्ञ डॉक्टरों का दल तैनात किया गया है। रोगियों की पहचान के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से लेकर जिला अस्पताल तक लगातार शिविरों का आयोजन किया गया। इनमें चिन्हित रोगियों को विकासखण्ड स्तर से रीवा तक लेकर आने के लिए वाहनों की व्यवस्था की गई है। कमिश्नर गोपालचन्द्र डाड तथा कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल द्वारा कैंसर शिविर के लिए समस्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। मेडिकल कालेज के डीन डॉ मनोज इंदुलकर एवं क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ संजीव शुक्ला शिविरों के लिए रोगियों की जाँच एवं उपचार के लिए आवश्यक डॉक्टर तथा उपकरणों की व्यवस्था कर रहे हैं। इन शिविरों को सफल बनाने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों तथा विभिन्न संघों का भी सराहनीय योगदान मिल रहा है।

हस्तशिल्पियों को वितरित किया गया शिल्प कार्ड।

जमालपुर/मीरजापुर। विकासखंड जमालपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत भुइली खास में क्षेत्र के सैकड़ों शिल्पकारों को शिल्प कार्ड वितरित किया गया। केंद्र सरकार के द्वारा चलाई जा रही शिल्पकारों के लिए लोक कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया आज के इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीसीएफ के अध्यक्ष विजय वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में चुनार मंडल के अध्यक्ष चंद्रहास गुप्ता, कार्यक्रम की अध्यक्षता बैजनाथ प्रजापति, तथा संचालन दुलारे प्रजापति ने किया। इस अवसर पर बच्चा, ब्रह्मानंद प्रजापति, धर्मेंद्र प्रजापति, प्रमोद कुमार प्रजापति, रामबाबू प्रजापति, राम जी प्रजापति, लल्लन प्रजापति साहित्य सैकड़ो लाभार्थी मौजूद रहे।

उप मुख्यमंत्री ने विभिन्न निर्माणाधीन कार्यों का किया निरीक्षण

रीवा(पुष्पंजली टुडे)।
उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपने रीवा प्रवास के दौरान विभिन्न निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण किया तथा निर्माण एजेंसी को पूर्ण गुणवत्ता के साथ समय सीमा में कार्य पूरा कराने के निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने शहर के शासकीय सुदर्शन कुमारी कन्या विद्यालय में निर्माणाधीन अतिरिक्त नवीन कक्षों के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया तथा निर्माण विभाग के अधिकारियों को समय सीमा में कार्य संपन्न कराने के निर्देश दिये। उन्होंने उद्यानिकी विभाग परिसर में निमार्णाधीन बुद्धा स्मारक पार्क का निरीक्षण किया तथा कार्य को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। इस दौरान विवेक दुबे, अनुज प्रताप सिंह कार्यपालन हाउसिंग बोर्ड, सहायक यंत्री हिमांशु कार्य उपस्थित रहे।

मानवाधिकार आयोग ने 49 प्रकरणों का किया निराकरण - पीड़ितों को मिली राहत

मानवाधिकार आयोग ने 49 प्रकरणों का किया निराकरण – पीड़ितों को मिली राहत

अधिकारी संवेदनशीलता से कार्यवाही कर आवेदक को अवगत कराएं – अध्यक्ष

रीवा(पुष्पांजली टुडे)
।कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में मानवाधिकार आयोग की दो सदस्यीय बेंच ने रीवा जिले के 73 प्रकरणों में सुनवाई की। सुनवाई के बाद 49 प्रकरणों का मौके पर निराकरण किया गया। मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री मनोहर ममतानी तथा सदस्य श्री राजीव कुमार टंडन ने प्रकरणों में सुनवाई की। सुनवाई के दौरान पुलिस विभाग से जु? 16 प्रकरणों का निराकरण किया गया। सुनवाई में पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ सौरभ सोनवणे, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, एसडीएम त्योंथर संजय जैन, एसडीएम मनगवां पीएस त्रिपाठी, सभी अनुविभागीय अधिकारी पुलिस तथा संबंधित अधिकारी एवं आवेदकगण उपस्थित रहे।
प्रकरणों की सुनवाई करते हुए आयोग के अध्यक्ष श्री ममतानी ने कहा कि सभी अधिकारी प्रकरणों में संवेदनशीलता से सुनवाई कर शासन के निर्देशों के अनुरूप उनका निराकरण करें। आवेदकगणों को भी की गई कार्यवाही से अनिवार्य रूप से अवगत कराएं। आमजनता और शासकीय सेवकों को अपने अधिकार प्राप्त करने का पूरा हक है। नियमों के तहत जो भी सुविधा दी जा सकती है उसमें कोताही न बरतें। शिक्षा विभाग के आउटसोर्स कर्मचारी रश्मि यादव के प्रकरण की सुनवाई करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि किसी भी रूप में नौकरी कर रही महिला को मातृत्व के लिए अवकाश की सुविधा अवश्य दें। जिला शिक्षा अधिकारी आउटसोर्स संस्था के अनुबंध में इस बात का प्रावधान करें कि महिला कर्मचारी को मातृत्व अवकाश दिया जाएगा। अध्यक्ष ने आउटसोर्स महिला कर्मचारी रश्मि यादव को तत्काल नौकरी में बहाल करने के निर्देश

दिए। अध्यक्ष श्री ममतानी ने दिवंगत शिक्षक के मेडिकल बिल भुगतान के प्रकरण की सुनवाई करते हुए कहा कि जिला शिक्षा अधिकारी तथा विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी इस बात का स्पष्टीकरण दें कि एक वर्ष तक बजट उपलब्ध हो जाने के बाद लंबित बिलों का भुगतान क्यों नहीं किया गया। प्रकरण में लंबित बिलों का भुगतान 31 मार्च तक कराएं तथा 8 अप्रैल को आयोग के समक्ष उपस्थित होकर पूरा विवरण प्रस्तुत करें। स्वास्थ्य विभाग के प्रकरणों की सुनवाई करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी आउटसोर्स एजेंसी को कर्मचारियों के लिए हर माह समय पर राशि का भुगतान कराएं। आउटसोर्स एजेंसी कर्मचारियों को भविष्य निधि की राशि काटकर फण्ड में जमा कराए तथा हर माह वेतन का भुगतान करे। मानवाधिकार आयोग की बेंच ने पुलिस विभाग, राजस्व विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग सहित विभिन्न विभागों के प्रकरणों की सुनवाई की। सुनवाई के दौरान आवेदक मधु सोनी, नंदन दुबे, माखनलाल, सुभाष पाण्डेय, बिपिन द्विवेदी, प्रभाकर पाण्डेय, दिलीप कुमार शुक्ला, प्रदीप मिश्रा, दिलीप कुमार कोल, लालमणि तिवारी, प्रेमवती साकेत, रामराज आदिवासी, प्रदीप सिंह, रामसिया ब?ई, सुनील कुमार, विष्णुदेव कुशवाहा, राहुल वर्मा, देवकली चौधरी, विद्यावती मिश्रा, छोटेलाल, रामबाबू केवट, पुष्पा दुबे, कन्हईलाल सहित विभिन्न आवेदकों के प्रकरणों की सुनवाई की।

मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह/निकाह कार्यक्रम में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने नवदंपत्तियों को वैवाहिक जीवन की दी शुभकामनाएँ

234 जोड़े विवाह बंधन में बंधे

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह/निकाय योजना शासन की सबसे सफल योजना है इसका आभास सामूहिक विवाह/निकाय आयोजन में शामिल हो रहे नवदंपत्तियों व उनके परिजनों के चेहरों में खुशी का भाव देखकर होता है। रीवा जनपद पंचायत एवं नगर निगम क्षेत्र के 234 जोड़े सामूहिक विवाह आयोजन में दाम्पत्य जीवन में बंधे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पुष्पवर्षा कर नवयुगलों को शुभ आशिर्वाद दिया। .नगर निगम क्षेत्र अन्तर्गत रीवा शहर में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश की गरीबों की हितकारी सरकार हर वर्ग व हर उस व्यक्ति के लिये कल्याणकारी योजनाएँ संचालित कर रही है जिसके वह हकदार है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह/निकाह योजना में शासन व प्रशासन स्वयं सभी व्यवस्थायें कर विवाह/निकाह का आयोजन करता है और जनप्रतिनिधि से लेकर प्रशासनिक अधिकारी तक नवदंपत्तियों को आशिर्वाद देते हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना में बेटी को धनराशि का चेक दिया जाता है ताकि वह अपने नवजीवन को आरंभ करने के लिये आवश्यक सामग्री ले सके। श्री शुक्ल ने नवदंपत्तियों को आशिर्वाद देते हुए उनके सुखमय जीवन की कामना की तथा अपेक्षा की कि भारतीय संस्कार के अनुरूप ब?ों का सम्मान करते हुए उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखें। उप मुख्यमंत्री ने नवदंपत्तियों को प्रतीक स्वरूप 49-49 हजार रूपये के चेक प्रदान किये। .इस अवसर पर अपने उद्बोधन में अध्यक्ष जिला पंचायत श्रीमती नीता कोल ने कहा कि गरीबों के लिये यह योजना अभिनव योजना है जिसमें शासन द्वारा विवाह की संपूर्ण जिम्मेदारी ली जाती है। मध्यप्रदेश की सरकार अंतिम छोर तक के व्यक्ति की चिंता करती है और उनके कल्याण के लिये योजनाएँ व कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। उन्होंने नवयुगलों को दाम्पत्य जीवन की शुभकामना दी। इस अवसर पर अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय ने नवयुगलों को शुभकामना देते हुए उनके सुखमय भविष्य की कामना की। इससे पूर्व संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे ने बताया कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह/निकाह कार्यक्रम में रीवा जनपद क्षेत्र के 186 तथा रीवा नगर निगम क्षेत्र के 48 युगल विवाह बंधन में बंध रहे हैं। रीवा व मऊगंज जिले में आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलनों के लिये 1527 जोड़ों का पंजीयन किया जा चुका है। कार्यक्रम में आयुक्त नगर निगम श्रीमती संस्कृति जैन, अध्यक्ष जनपद पंचायत रीवा संगीता राजेश यादव, पूर्व महापौर शिवेन्द्र सिंह, राजेन्द्र ताम्रकार पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष विभा पटेल, सहित पार्षद, जिला एवं जनपद पंचायतों के सदस्य, सीईओ जनपद रीवा हलधर मिश्र सहित अधिकारी, कर्मचारी तथा सामूहिक विवाह में शामिल नवयुगल व उनके परिजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

विधिक सेवाओं और सरकारी योजनाओं के प्रति किया जागरूक, पीड़िताओं की सुनी समस्याएं, किया मार्गदर्शन

फिरोजाबाद । महिला सशक्तिकरण को लेकर सर्व उत्थान उज्जवला समिति द्वारा एसआरके पीजी कॉलेज के कंप्यूटर साइंस एंड एजुकेशन स्ववित्त पोषित विंग परिसर में एक दिवसीय विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें, पीड़ित महिलाओं की समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए उनका मार्ग दर्शन किया गया। इस दौरान सभी को शपथ दिलाई गई और महिला कल्याण अधिकारी द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत हस्ताक्षर अभियान चलाया गया और पैंपलेट वितरण कर व स्टीकर चिपकाकर महिलाओं एवं छात्राओं को जागरूक किया गया। संचालन एसआरके पीजी कॉलेज कंप्यूटर साइंस एंड एजुकेशन स्ववित्त पोषित विंग के निदेशक उमाशंकर गुप्ता ने किया।जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव व अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश यजुवेंद्र विक्रम सिंह, डीजीसी राजीव कुमार, महिला कल्याण अधिकारी अनम अकाशा, स्वीप ब्रांड एंबेसडर संध्या द्विवेदी, समाज सेविका कल्पना राजौरिया, अधिवक्ता निशी शर्मा, मनोज कुमार व अन्य मंचासीन अधिकारियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित व माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव व अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश यजुवेंद्र विक्रम सिंह ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ हस्ताक्षर जागरूकता अभियान का शुभारंभ किया और विधिक सेवाओं के साथ साथ महिलाओं को मुफ्त कानूनी सलाह एवं सरकारी वकील मुहैया कराने की प्रक्रिया के विषय में विस्तार से बताते हुए उन्हें, आत्मनिर्भर व साक्षर बनने के लिए प्रेरित किया और उनकी समस्याओं को एक एक कर सुन उनका मार्ग दर्शन किया।उन्होंने कहा कि, महिलाओं में विधिक जागरूकता का बहुत अभाव है। उन्हें, न्याय प्रणाली की हर इकाई से वाकिफ होना चाहिए। ताकि, समस्याओं से वे निजात पा सके। यदि, किसी को भी विधिक सहायता या संबंधित जानकारियों की आवश्यकता है तो, वह न्यायालय परिसर स्थित कार्यालय विधिक सेवा प्राधिकरण में संपर्क कर सकते हैं।डीजीसी राजीव कुमार ने महिलाओं को जागरूक करते हुए कहा कि, सभी को आत्मनिर्भर होना चाहिए। अपने घर को टूटने से बचाने के लिए विश्वास की डोर को मजबूत रखते हुए उन्हें भी उन महिलाओं से जो, आज भी सामूहिक परिवार चला रही हैं प्रेरणा लेते व सामंजस्य मानते हुए समझौता की पहल करनी चाहिए। ताकि, ऐसे हालात ही पैदा ही न हो और उन्हें, ऐसी समस्याओं से न गुजरना पड़े।महिला कल्याण अधिकारी अनम अकाशा ने महिला संबंधी अधिनियमों पर चर्चा करते हुए कन्या सुमंगला योजना, विधवा पेंशन स्पॉन्सरशिप व सरकार की अन्य महत्वाकांक्षी योजनाओं के विषय में विस्तार से बताया एवं चाइल्ड हेल्प लाइन 1098, महिला हेल्प लाइन 1090, घरेलु हिंसा हेल्पलाइन 181, साइबर हेल्प लाइन 1930, पुलिस हेल्प लाइन 112, मुख्यमंत्री हेल्प लाइन 1076 के साथ साथ साइबर क्राइम, घरेलू हिंसा, सेल्फ डिफेंस, गुड टच बैड टच आदि के प्रति जागरूक किया और सखी वन स्टॉप सेंटर के कार्य व पीड़िताओं को दी जाने वाली सुविधाओं के विषय में विस्तार से बताया।मंचासीन अन्य अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी को जागरूक किया।इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व डीजीसी विश्राम राठौर, एडीजीसी मनोज शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता अनूप चंद्र जैन, निशी शर्मा एडवोकेट, समाजसेविका कल्पना राजौरिया, रमा बीएल भदौरिया एवं संस्था अध्यक्ष रश्मि जैन और पीड़िताओं सहित विद्यालय के शिक्षक, शिक्षिकाएं, स्टॉफ व छात्राएं उपस्थित रहीं।

अग्निवीर भर्ती की तैयारी हेतु जिला प्रशासन द्वारा नि :शुल्क कोचिंग की जा रही व्यवस्था

इच्छुक आवेदक 28 फरवरी तक कर सकते हैं आवेदन

कोरबा 20 फरवरी 2024/भारतीय थल सेना मे अग्निवीर भर्ती हेतु जिला प्रशासन द्वारा इच्छुक आवेदकों को लिखित परीक्षा की तैयारी हेतु निःशुल्क आवासीय कोचिंग की व्यवस्था की जा रही है। प्राचार्य लाईवलीहुड कॉलेज ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि 01 मार्च 2024 से लाईवलीहुड कॉलेज में अग्निवीर भर्ती हेतु तैयारी कराई जाएगी। साथ ही संस्थान में आवेदकों को फिजिकल ट्रेनिंग भी कराई जाएगी। जिसमें 5 किलोमीटर दौ?, लम्बी कूद, पुल अप आदि का भी प्रशिक्षण शामिल हैं। उन्होंने बताया कि संस्थान में कुल 200 छात्रों को निःशुल्क कोचिंग की सुविधा प्रदान की जा रही है। जिसके अंतर्गत कुल 100 छात्रों को

निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण एवं 100 छात्रों को गैर आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि कॉलिज से 15 किलोमीटर से अधिक दूरी में निवासरत आवेदकों को निःशुल्क आवासीय सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।निःशुल्क कोचिंग प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु इच्छुक आवेदकों से 28 फरवरी 2024 तक आवेदन आमंत्रित किया गया है। आवेदक निर्धारित तिथि तक लाईवलीहुड कॉलेज में उपस्थित होकर अपना आवेदन जमा कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए लाइवलीहुड कॉलेज कोरबा के दूरभाष क्रमांक- 07759-796297 एवं मोबाइल नंबर 9589583878 पर संपर्क किया जा सकता है

संपादकीय

इंटरनेट पर बंदिश

हालिया किसान आंदोलन के चलते हरियाणा व पंजाब में इंटरनेट पर लगी पाबंदी से एक बार फिर सवाल उठा है कि क्या कानून–व्यवस्था बनाये रखने के नाम पर लाखों नागरिकों का जीवन बाधित किया जा सकता है? सही मायनों में आधुनिक युग में इंटरनेट जीवन प्रवाह का पर्याय बनकर उभरा है। यहां तक कि एक मामले में सुप्रीम कोर्ट भी टिप्पणी कर चुका है कि इंटरनेट के माध्यम से सूचना तक पहुंच भारतीय संविधान के तहत दिया गया एक मौलिक अधिकार है। एक मामले में कोर्ट ने कहा कि यदि सरकार कानून व्यवस्था के नाम पर इंटरनेट के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाती है तो वह अस्थायी, एक दायरे में सीमित, कानूनी तौर पर वैध और अपरिहार्य होना चाहिए। एक संसदीय समिति ने भी अपनी रिपोर्ट में इंटरनेट प्रतिबंध से जुड़े सरकार के फैसलों पर सवालिया निशान लगाते हुए इस मामले में ज्यादा पारदर्शिता अपनाने की जरूरत बतायी। हालांकि, अक्सर सरकार की दलील होती है कि यह प्रतिबंध सुरक्षा–कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए लगाया गया। वैसे भारत समेत दुनिया के तमाम देशों में यह बहस पुरानी है कि इंटरनेट पर प्रतिबंध कब और क्यों लगाया जाना चाहिए। दरअसल, इससे न केवल नागरिकों की दिनचर्या बुरी तरह प्रभावित होती है बल्कि कारोबार को भी करोड़ों का नुकसान उठाना पड़ता है। आजकल जब छात्र बोर्ड की परीक्षाओं में लगे हैं तो उनकी परेशानियों का अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। देश के विभिन्न भागों में गाहे–बगाहे लगने वाले इंटरनेट प्रतिबंधों को दुनिया में बड़ी गंभीरता से लिया जाता है और इसे गैर–लोकतांत्रिक कदम के तौर पर देखा जाता है। हाल के वर्षों में भारत में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने की प्रवृत्ति इतनी अधिक देखी गई है कि भारत को इंटरनेट शटडाउन का बादशाह तक कह दिया जाता है। बताते हैं कि वर्ष 2021 में दुनिया में इंटरनेट प्रतिबंध के जो 182 मामले दर्ज किये गए, उसमें 106 भारत में हुए। एक समय था कि सड़कों पर आवाजाही बंद होने और परिवहन सेवा–बाजार बंद होने को जन–जीवन ठप होना कहा जाता है। लेकिन यदि आज इंटरनेट बंद हो जाए तो सही मायनों में जन–जीवन ठप हो जाता है। अभिव्यक्ति और मनोरंजन से इतर इंटरनेट सेवा बंद होने से सबसे बड़ी आर्थिक चोट पहुंचती है। एक घंटे इंटरनेट बंद होने से करोड़ों का नुकसान होता है। एक तरफ तो सरकार डिजिटल इंडिया की कामयाबी पर इतराती है। लोगों को ज्यादा से ज्यादा बैंकिंग, कारोबार, लेन–देन और पढ़ाई को ऑनलाइन करने की दुहाई देती है। वहीं दूसरी ओर एक झटके में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा देती है। भले ही इंटरनेट और अन्य कंपनियों में पश्चिमी देशों के अपने आर्थिक हित निहित होते हैं। उनके मानवाधिकार के पैमाने अपने होते हैं। अमेरिका में अश्वेत आंदोलन के दौरान इंटरनेट पर अपरोक्ष रूप से प्रभाव डाला गया। एक पर्यावरण आंदोलन के दौरान ब्रिटेन में भी प्रतिबंध देखा गया। लेकिन इसके बावजूद उनका तर्क होता है कि इंटरनेट शटडाउन गैर–कानून और मानवाधिकारों का उल्लंघन है। भारत में खासकर जम्मू–कश्मीर में लंबे–लंबे इंटरनेट प्रतिबंधों पर वैश्विक स्तर पर सवाल उठते रहे हैं। वहीं सरकार का तर्क होता है कि प्रतिबंध की वजह चरमपंथियों के विरुद्ध होने वाले अभियान, अशांति फैलाने व राष्ट्रविरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के मकसद से लगाया जाता है। वहीं आलोचक इन तर्कों को सही नहीं ठहराते हैं क्योंकि इससे किसी के मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण होता है। साथ ही यह भी कि इसके फायदे कम और नुकसान ज्यादा होते हैं। लंबे प्रतिबंध से जहां करोड़ों लोग प्रभावित होते हैं, वहीं अरबों रुपये का नुकसान भी होता है। विगत में देखा गया है कि नागरिकता संशोधन विधेयक, किसान आंदोलन और कश्मीर में कई मौकों पर लंबे इंटरनेट प्रतिबंध लगे। जहां एक ओर राजनीति प्रेरित इंटरनेट प्रतिबंध की आलोचना होती है और इसे लोकतंत्र के लिये चुनौती बताया जाता है, वहीं सरकार दुष्प्रचार और साइबर हमलों को रोकने की दलील देती है। पश्चिमी देश मानते हैं कि साइबर स्पेस लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाला होना चाहिए। वहीं कुछ सरकारें सोशल मीडिया कंपनियों की वजह से छोटे देशों के लोकतंत्र पर आने वाले खतरों की जवाबदेही तय करने की बात भी करती हैं।

लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा में भारत पाक

हाल ही में पाकिस्तान में हुए चुनाव में भी ऐसी ही बेईमानी हुई, लेकिन वहां एक अधिकारी ने सामने आकर अपनी बेईमानी न केवल कबूल की है बल्कि खुद के लिए सजा की मांग भी कर दी। पाकिस्तान में आम चुनाव हुए 10 से अधिक दिन हो गए हैं लेकिन किसी भी दल को पूर्ण बहुमत न मिलने के कारण अब तक सरकार का गठन नहीं हुआ है।

यह गजब संयोग है कि भारत और पाकिस्तान दोनों इस वक्त लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा से एक साथ गुजर रहे हैं। भारत में लोकतंत्र की सुदीर्घ परंपरा रही है और पाकिस्तान लोकतंत्र के लिए संघर्ष करता आया है, यह दोनों देशों के बीच का बुनियादी फर्क है। लेकिन दोनों देशों में एक बड़ी समानता ये है कि सत्ता पर काबिज होने के लिए पाकिस्तान में भी षड्यंत्र रचे जा रहे हैं और भारत में भी ऐसा ही हो रहा है। चंडीगढ़ का मेयर चुनाव इसका ताजा उदाहरण है। पहले इस चुनाव को केवल इस वजह से टाला गया कि पीठासीन अधिकारी बीमार थे। इसके बाद 30 जनवरी को जब चुनाव हुए तो आप और कांग्रेस का गठबंधन हार गया, जबकि भाजपा को आसान जीत मिल गई। इस चुनाव में आठ मतपत्रों को खारिज किया गया था और आप ने आरोप लगाए थे कि रिटर्निंग अधिकारी अनिल मसीह ने ही मतपत्रों पर निशान बनाए थे। उनका एक वीडियो फुटेज भी सामने आया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को लोकतंत्र की हत्या करार दिया था और सोमवार को हुई सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट में अनिल मसीह ने स्वीकार भी किया कि उन्होंने आठ मतपत्रों पर निशान लगाए थे। इसके बाद मंगलवार को अदालत ने मतपत्रों की फिर से गिनती के आदेश दिए हैं, इसमें खारिज किए सभी आठ मतपत्र भी शामिल थे, जिससे आप के कुलदीप कुमार मेयर घोषित हो गए। चंडीगढ़ मेयर चुनाव देश में होने वाले विधानसभा और लोकसभा चुनावों से बहुत छोटा है। यहां पर विपक्ष ने हिम्मत नहीं हारी और इंसाफ के लिए लड़ाई जारी रखी, तो सच सामने आ गया। लेकिन इससे निष्पक्ष और पारदर्शी चुनावों पर प्रश्नचिह्न तो लग ही गए हैं। और सबसे बड़ा सवालिया निशान तो इस बात पर है कि क्या सत्ता के दबाव में स्वतंत्र संस्थाओं और अधिकारियों को बेईमानी करने दी जा रही है। हाल ही में पाकिस्तान में हुए चुनाव में भी ऐसी ही बेईमानी हुई, लेकिन वहां एक अधिकारी ने सामने आकर अपनी बेईमानी न केवल कबूल की है, बल्कि खुद के लिए सजा की मांग भी कर दी। पाकिस्तान में आम चुनाव हुए 10 से अधिक दिन हो गए हैं, लेकिन किसी भी दल को पूर्ण बहुमत न मिलने के कारण अब तक सरकार का गठन नहीं हुआ है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पीटीआई के लोगों ने इस बार निर्दलीय चुनाव लड़ा, लेकिन नवाज शरीफ की पार्टी पीएमएलएन और बिलावल भुट्टो की पार्टी पीपीपी से ज्यादा वोट हासिल किए। फिर भी पीटीआई सरकार नहीं बना सकी, न ही अब तक नवाज शरीफ और बिलावल भुट्टो कोई समझौता कर पाए हैं। इस बीच चुनाव में धांधली के आरोप भी लगे थे और कहा गया था कि जीते हुए कई निर्दलीय प्रत्याशियों को हारा हुआ घोषित किया गया है। इससे पहले कि इस मामले की कोई जांच होती और चुनाव आयोग को क्लीन चिट मिलती, रावलपिंडी के कमिश्नर लियाकत अली चट्ठा ने बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने कहा कि हमने 13 ऐसे निर्दलीय कैंडिडेट्स जो 70 से 80 हजार वोटों से आगे चल रहे थे, उन्हें धांधली कर हरवा दिया। रावलपिंडी के क्रिकेट स्टेडियम में मीडिया से बात करते हुए लियाकत अली चट्ठा ने कहा कि वो इस वजह से सो नहीं पा रहे हैं कि उन्होंने देश की पीठ में छुरा घोंपा है। मैंने जो अन्याय किया है उसके लिए मुझे दंडित किया जाना चाहिए और इस अन्याय में शामिल अन्य लोगों को भी सजा होनी चाहिए। कमिश्नर चट्ठा ने यह भी कहा कि वे 1971 वाला दौर फिर नहीं देखना चाहते हैं। गौरतलब है कि 1971 में ही बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग हुआ था, क्योंकि तब भी शेख मुजीबुर्रहमान को चुनाव में जीत हासिल करने के बावजूद पाकिस्तान की सैन्य हुकूमत सत्ता सौंपना नहीं चाहती थी। इसके बाद जो कुछ हुआ, उस इतिहास से सब वाकिफ हैं। पाकिस्तान का न्यायतंत्र, सैन्य तंत्र और सत्ता पर काबिज होने की इच्छा लिए राजनेता भले इस खूनी इतिहास से कोई सबक न लेना चाहें, लेकिन कमिश्नर चट्ठा ने एक रास्ता उन लोगों को दिखा दिया है, जो ईमानदारी के साथ लोकतंत्र के रास्ते पर चलना चाहते हैं। यह याद रखना चाहिए कि आजादी के 75–76 बरसों में पाकिस्तान लोकतंत्र के लिए तरसता रहा है, सैन्य तानाशाही ने वहां लोकतंत्र की जड़ों को बार–बार कुचला और दूसरी ओर धार्मिक कट्टरता से लोकतंत्र बेड़ियों में जकड़ा गया। हालांकि वहां की अवाम इसके बावजूद लोकतंत्र की सत्ता स्थापित करने के लिए जूझती रही, उसने धर्म और सेना की सत्ता के आगे अपने जमीर का समर्पण नहीं किया। दूसरी ओर भारत ने आजादी के साथ ही लोकतंत्र का पौधा रोपा और 7 दशकों में इसे विशाल लहलहाते वृक्ष में तब्दील होते देखा। अफसोस इस बात का है कि अब अमृतकाल के नाम पर इस घने और मजबूत दरख्त की जड़ों में धर्मांधता और अधिनायकवाद का मट्ठा डाला जा रहा है। चंडीगढ़ के बाद बेईमानी के और नए गढ़ तैयार किए जा रहे हैं, जहां चुनाव प्रक्रिया से खिलवाड़ कर सत्ता की राह बनाई जा सके। कपट और धूर्तता से भरे इस रास्ते को तभी बंद किया जा सकता है जब प्रशासनिक ईमानदारी दिखाई जाए। जो काम रावलपिंडी में कमिश्नर लियाकत अली चट्ठा ने किया है, क्या भारत के अधिकारी देश सेवा का वही जज्बा दिखा सकते हैं, यह एक बड़ा सवाल है।

मोदी के रामराज्य में सुदामा के चावल पर पीआईएल

डॉ. दीपक पाचपोर

भारत लोकतंत्र की जननी है– यह कहने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के संभल में मंगलवार को कल्कि धाम मंदिर का शिलान्यास करते हुए नये तरीके से न्यायपालिका पर हमला बोल दिया है, जो बतलाता है कि वे सरकार के खिलाफ आ रहे अदालती फैसलों से खासे परेशान चल रहे हैं। उनकी परेशानी स्वाभाविक तो है लेकिन किसी भी देश के कार्यपालिका प्रमुख द्वारा ऐसी टिप्पणी न तो वांछनीय है और न ही शोभनीय। उन्हें अगर न्यायपालिका से किसी तरह की शिकायत है तो उन्हें वह कोर्ट के भीतर ही निपटाना चाहिये। उस लड़ाई को इस प्रकार से किसी सार्वजनिक सभा तक ले जाना उचित नहीं। वैसे मोदी का गुस्सा इस लिहाज से जायज है क्योंकि पिछले कुछ दिनों से कई फैसले केन्द्र सरकार के विरुद्ध तो आये ही हैं, निकट भविष्य में और भी सम्भावित हैं। समारोह में मौजूद कुछ दिनों पूर्व कांग्रेस से निकाले गये प्रमोद कृष्णम को सम्बोधित करते हुए मोदी ने तंज कसा कि यह तो अच्छा हुआ जो आपने (कृष्णम) केवल अपनी भावनाएं ही व्यक्त कीं। भावनाओं के अलावा मुझे कुछ नहीं दिया वरना यह ऐसा समय चल रहा है कि अगर आज कृष्ण होते और सुदामा उन्हें चावल की पोटली भेंट करते तो कोई उसका वीडियो बनाता और पीआईएल (जनहित याचिका) दायर कर देता कि पोटली में क्या है।' मोदी के गुस्से का सबसे ताजा कारण निश्चित ही हाल का वह निर्णय होगा जिसमें मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने मोदी सरकार द्वारा 2017–18 में लाये गये इलेक्टोरल (चुनावी) बॉन्ड्स को असंवैधानिक, नागरिक अधिकारों का हनन और सूचना के अधिकार का उल्लंघन बतलाया है। मोदी इस बात से इत्तेफाक नहीं रखते कि जनता को कुछ बताया जाये। वे ऐसे हर नियम से खुद व उनकी सरकार को दूर कर देते हैं जिसमें जनता को जवाब देना पड़े। इसलिये वे मीडिया से बात नहीं करते, खुली परिचर्चाओं में हिस्सा नहीं लेते, कोई सवाल नहीं लेते। पत्रकार हों भी तो उनके अपने गोद लिये हुए अथवा अक्षय कुमार या प्रसून जोशी जैसे सिनेमा कलाकार–गीतकार हों जो उनसे पहले से दिये गये प्रश्नों के आधार पर आम चूसने के तरीकों और 18–18 घंटे काम करने के बावजूद न थकने का कारण जानना चाहते हैं। ऐसे प्रायोजित सवालों के उत्तरों पर कुर्बान होने वाला उनके प्रशंसकों व समर्थकों का एक बड़ा वर्ग है, तो मोदी को अगर खुद को प्रधानमंत्री नहीं बल्कि सम्राट होने की गलतफहमी हो जाये, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यही कारण है कि देश में लोकतंत्र का आग्रह ही नहीं बल्कि शर्त मढ़ने वाला ऐतिहासिक संसद भवन उन्हें खाने को दौड़ता है। इसलिये वे उसे बन्द कर सेन्ट्रल विस्टा बनवाते हैं, नये–नये परिधान पहनकर उसमें होने वाली कथित चर्चाओं में गेस्ट एपीयरेंस देते हैं, विपक्ष को अपमानित करते हैं, पहले भ्रष्टाचार के अलावा कोई काम न होने का दुखड़ा सुनाते हैं। मोदी का विश्वास लोकतंत्र में नहीं राजतंत्र में है इसलिये वे नये भवन में राजदण्ड का प्रतीक सेंगोल स्थापित करते हैं। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में धर्म के लिये कोई जगह नहीं है इसलिये वे इसे राजतंत्र में बदलना चाहते हैं। इससे धर्म की जगह बनती है। वैसे भी जनहित के काम करने के बनिस्बत धर्म के बल पर सरकार चलाना आसान होता है। जनता को राजतंत्र प्रणाली के पक्ष में सोचने व बोलने का एक और बड़ा फायदा मोदी जैसे राष्ट्राध्यक्षों को यह मिलता है कि विपक्ष जैसे तत्व से देश को मुक्त करने की अवधारणा बलवती होती है तथा (दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से) यह भी जनता द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है कि राजा की आलोचना नहीं की जा सकती। इसीलिये जब मोदी कहते हैं कि उन्हें विपक्ष गालियां देता है, तो उनका इशारा सरकार की आलोचना करने या सवाल करने से होता है। लोकतंत्र को छोड़कर राजतांत्रिक शासन प्रणाली में देश विश्वास करे या न करे, मोदी करते हैं, उनकी भारतीय जनता पार्टी करती है, मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ करता है और उनके समर्थक तो करते ही हैं। इसलिये वे यह नहीं जानते और जानते भी हैं तो मानते नहीं, कि लोकतांत्रिक प्रणाली में शासन का कामकाज शक्ति पृथक्करण के आधार पर चलता है। सरकार से कामों से न्याय–अन्याय होने की मुहर लगाने का काम कोर्ट का होता है। संविधान में यही व्यवस्था है। न्यायालयों के सामने जवाब देने का काम सरकार का होता है। उसे न्यायपालिका में अपनी बात रखनी होती है। फैसला नापसंद होने पर भी उसे सर माथे पर लेना पड़ता है और कोर्ट द्वारा बतलाई गई खामियों

को दूर करना होता है। संभल में मोदी का जो गुस्सा न्यायपालिका पर उतरा है, वह इसलिये कि उनकी सरकार को कई मामलों में कोर्ट की फटकारें सुननी पड़ी हैं। बहुत पीछे न जायें तो अनेक हालिया मामलों में केन्द्र सरकार के खिलाफ आये कई निर्णय मोदी को व्यथित करने के लिये काफी हैं। मणिपुर के मामले ने तो मोदी को घुटनों पर ला दिया था। पिछले साल के मई महीने में एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें वहां की दो कुकी महिलाओं के साथ दो माह पहले हुए अमानवीय बर्ताव की ऐसी तस्वीरें थीं जिनसे देश ही नहीं पूरी दुनिया दहल गयी थी। सवाल खड़े होने लाजिमी थे। कई देशों की संसद में भी इस पर चर्चा हुई थी। यहां तक कि मोदी को इस मामले पर मुंह खोलना पड़ा था जिनकी सरकार ने (केन्द्र व राज्य की) इसे दबाये रखा था। नये संसद भवन के पहले सत्र के दिन तथा उनकी अमेरिका यात्रा के दौरान संक्षिप्त ही सही, परन्तु मोदी को बयान देने पड़े थे। मोदी की परेशानियां यहीं तक नहीं रुकीं। जिन मोदी ने पहले गुजरात के मुख्यमंत्री तथा बाद में पीएम के रूप में अपने (व साथियों के भी) पक्ष में कई अदालती फैसले पाए थे, डीवाई चंद्रचूड़ के आने के बाद अड़चन में हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कई निर्णय सरकार के खिलाफ दिये हैं– वे भी तल्ख टिप्पणियों के साथ। मणिपुर में कहा कि 'यदि सरकार कुछ नहीं करती तो कोर्ट अपने तरीके से कुछ करेगी', तो वहीं चुनावी बॉन्ड्स को रिश्वतखोरीर बतलाकर सुप्रीम कोर्ट ने मोदी के ईमानदारी के मुखौटे को उतार फेंका। ऐसे ही, चंडीगढ़ मेयर के चुनाव में हुई धांधली को उन्होंने ख्लोकतंत्र की हत्याख बतलाकर भाजपा को निर्वस्त्र कर दिया। अपने उत्पादों के लिये स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे किसानों के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष जब यह गुहार लगाते जाते हैं कि, सड़क यातायात जाम के कारण सुनवाई में विलम्ब से या न आने वाले वकीलों के मुवक्किलों के विरुद्ध निर्णय न दिये जायें, तो चन्द्रचूड़ यह कहकर उन्हें बैरंग लौटा देते हैं कि वे चिंता न करें, कोर्ट देख लेगी। पूर्ववर्ती कई जज सरकार के पक्ष में फैसला देकर उपकृत हो चुके हैं। अनुकूल फैसला देने वाले कोई जज राज्यसभा में हैं तो कोई राज्यपाल बने बैठे हैं। मोदी को ऐसे ही न्यायाधीश और ऐसी ही न्यायपालिका चाहिये। उनके दुर्भाग्य से चंद्रचूड़ बाकियों से अलग हैं। वे बेखौफ सरकार के खिलाफ फैसले दे रहे हैं और कोर्टरूम के बाहर भी लोगों को संदेश दे रहे हैं कि वे निर्भीक होकर सरकार की आलोचना करें। उनकी सुरक्षा के लिये भारत की न्यायपालिका बैठी हुई है। साथ ही अपनी ही प्रणाली पर भी राय दे रहे हैं कि अपराधिक मामलों में जमानत देने में निचली अदालतें भयग्रस्त महसूस करती हैं।

केंद्र को अब पारदर्शी चुनावी फंडिंग प्रणाली पर काम करना चाहिए

कल्याणी शंकर

भारतीय चुनाव एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें लाखों मतदाता और अनेक राजनीतिक दल शामिल होते हैं। ये पार्टियां अपने अभियानों के वित्तपोषण के लिए व्यक्तियों और निगमों के योगदान पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं, क्योंकि फंडिंग महत्वपूर्ण है। चुनाव के दौरान बहुत सारा काला धन भी घूमता है। 2014 में जब नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने राजनीति में अवैध धन का उपयोग रोकने का वायदा किया था। तीन साल बाद, 2017 में उन्होंने चुनावी बांड योजना पेश की, जिसके बारे में उनका दावा था कि इससे राजनीतिक फंडिंग में पारदर्शिता बढ़ेगी। हालांकि, कुछ लोगों ने गोपनीयता खंड और मौलिक अधिकारों के उल्लंघन को अदालत में चुनौती दी। पिछले हफ्ते सर्वोच्च न्यायालय ने गुमनाम राजनीतिक चंदे को अवैध घोषित कर दिया। इस फैसले को भाजपा के लिए पचाना मुश्किल हो सकता है क्योंकि 2018 से प्रभावी इस योजना से सत्तारूढ़ दल को सबसे अधिक फायदा हुआ है। शीर्ष अदालत ने फैसला सुनाया कि चुनावी बांड नागरिकों के सरकारी जानकारी तक पहुंचने के अधिकार का उल्लंघन करते हैं और संविधान की धारा19(1)(ए) का उल्लंघन करते हैं। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने खुले शासन के महत्व पर जोर दिया, 'मतदान के विकल्प का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए राजनीतिक दलों की फंडिंग के बारे में जानकारी आवश्यक है।' सरकारी स्वामित्व वाले भारतीय स्टेट बैंक को इन बांडों को जारी करने से रोकने और भारत के चुनाव आयोग को विवरण प्रदान करने का आदेश दिया गया है। यह फैसला पांच जजों के समूह ने दिया। न्यायाधीशों ने जांच की कि क्या चुनावी बांड योजना ने संवैधानिक नियमों को तोड़ा है, मतदाताओं को महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने से रोका है, दानदाताओं की गोपनीयता की रक्षा करते हुए गुप्त दान की अनुमति दी है, और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खतरे में डाला है? पहले, राजनीतिक दलों को 20,000 रुपये से अधिक का योगदान देने वाले दानदाताओं की पहचान का खुलासा करना आवश्यक था। हालांकि, चुनावी बांड राजनीतिक दलों को दानदाताओं की पहचान उजागर किये बिना प्राप्त धन की रिपोर्ट करने की अनुमति देते हैं। इन बॉन्ड्स की रेंज 1,000 से 10 करोड़ रुपये तक होती है। लोगों को जानना चाहिए कि राजनीतिक फंडिंग पारदर्शी है या नहीं। मुख्य आलोचनाओं में से एक यह है कि इन बांडों को खरीदते समय यह पता लगाना कठिन है कि पैसा कहां से आता है, जिससे धन के स्रोत की पहचान करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। 2017 से 2022 तक के एडीआर आंकड़ों के अनुसार, इस अवधि के दौरान निगमों द्वारा दान की गई कुल राशि 3,299.85 करोड़ रुपये थी। इस रकम का सबसे बड़ा हिस्सा भाजपा को मिला। चुनावी बांड के माध्यम से कांग्रेस पार्टी को 406.45 करोड़ रुपये, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) को 109.5 करोड़ रुपये और अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (एआईटीसी) को 49.7 करोड़ रुपये मिले। एडीआर की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि राजनीतिक योगदान के बारे में जानकारी छिपाना अनुचित है। करदाताओं को पता होना चाहिए कि राजनीतिक दलों को धन कहां से मिलता है। पारदर्शिता की कमी जवाबदेही पर सवाल उठाती है। करदाताओं का पैसा बांड छापने में खर्च होता है और एसबीआई को उनकी बिक्री से मुनाफा होता है। इसमें दावा किया गया है कि करदाताओं को यह जानने का अधिकार है कि राजनीतिक दलों को धन कहां से मिलता है। अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता जवाबदेही के बारे में संदेह पैदा करती है। करदाताओं के पैसे का उपयोग बांड मुद्रित करने के लिए किया जाता है, और उनकी बिक्री से एसबीआई के मुनाफे को अनुचित माना जाता है। जनता और विपक्षी दलों को इन दान के स्रोत के बारे में पता होना चाहिए, हालांकि सरकार एसबीआई से डाटा विवरण प्राप्त कर सकती है।संसद में, सरकार ने प्रमुख केंद्रीय एजेंसियों और विपक्षी संसद सदस्यों की चेतावनियों की उपेक्षा की और चुनावी बांड योजना शुरू की। बांड विधेयक को धन विधेयक के रूप में पारित किया गया था। इससे पहले, कानून मंत्रालय ने इस बात पर जोर दिया था कि बांड योजना को जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 का पालन करना चाहिए। चुनाव आयोग और आरबीआई ने भी 2017 योजना के प्रावधानों का विरोध किया, लेकिन सरकार ने भाजपा के हितों को ध्यान में रखते हुए इसे लागू किया। चुनाव आयोग ने 2,858 राजनीतिक दलों को पंजीकृत किया है, लेकिन केवल एक छोटा प्रतिशत, केवल 2.17प्रतिशत, वर्तमान में मान्यता प्राप्त है। कुछ पार्टियां कभी भी चुनाव में भाग नहीं ले सकती हैं, जबकि अन्य मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों में शामिल हो सकती हैं। 2019 के चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों को रिकॉर्ड तोड़ रकम मिली। चुनावी बांड के माध्यम से 2,760.20 करोड़ का गुमनाम चंदा आया। यह 2017–18 और 2018–19 में मिली सबसे ज्यादा रकम थी। 2017–18 से 2020–21 तक, 19 राजनीतिक दलों ने लगभग 6.5 हजार करोड़ रुपये के चुनावी बांड भुनाये। पिछले छह लोकसभा चुनावों में खर्च लगभग छह गुना बढ़ गया है जो 9,000 रुपये से बढ़कर 2019 में 55,000 करोड़ रुपये हो गया था। 2018 से मार्च 2022 तक भाजपा को 57 प्रतिशत चंदा मिला, जबकि कांग्रेस को सिर्फ 10 प्रतिशत ही प्राप्त हुआ। उम्मीद है कि सरकार पहले के अवसरों के विपरीत, सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का सम्मान करेगी।

ग्रे मार्केट में तूफान बना यह IPO, इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जर बनाती है कंपनी, प्राइस बैंड 142, निवेश का मौका

नई दिल्ली.इलेक्ट्रिक वाहन (EV) चार्जर बनाने वाली कंपनी एक्सिकॉम टेली-सिस्टम्स लिमिटेड का आईपीओ 27 फरवरी को ओपन हो रहा है। निवेशक इस इश्यू में 29 फरवरी तक दांव लगा सकते हैं। इसके लिए प्राइस बैंड का ऐलान हो गया है। एक्सिकॉम टेली-सिस्टम्स आईपीओ का प्राइस बैंड 135 से 142 प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी की योजना इश्यू से कुल ?429 करोड़ जुटाने की है। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) के अनुसार, एंकर निवेशकों के लिए यह इश्यू 26 फरवरी को ओपन हो रहा है।

क्या है अन्य डिटेल

आईपीओ में कुल 329 करोड़ तक के इक्विटी शेयरों का एक ताज़ा मुद्दा और प्रमोटर नेक्स्टवेव कम्युनिकेशंस द्वारा 70.42 लाख इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश (ओएफएस) कंपोनेंट्स शामिल है। निवेशक न्यूनतम 100 इक्विटी शेयरों और उसके बाद उसके गुणकों के लिए बोली लगा सकते हैं। कंपनी ने 135 प्रति शेयर के इश्यू प्राइस पर 52.59 लाख इक्विटी शेयरों का प्री-आईपीओ प्लेसमेंट शुरू किया है, जो कुल मिलाकर 71 करोड़ है। नेक्स्टवेव कम्युनिकेशंस के पास कंपनी में 76.55त्न की बहुमत हिस्सेदारी है, जबकि एचएफसीएल के पास फर्म में 7.74त्न हिस्सेदारी है। एक्सिकॉम टेली-सिस्टम्स में प्रमोटरों की सामूहिक रूप से 93.28त्न हिस्सेदारी है।मार्केट जानकारों के मुताबिक, एक्सिकॉम टेली-सिस्टम्स लिमिटेड का आईपीओ ग्रे मार्केट में 80 रुपये प्रीमियम पर उपलब्ध है।

अडानी के इस शेयर 1 साल में दिया छप्परफाड़ रिटर्न, क्या आगे भी जारी रहेगी रैली

नई दिल्ली. हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद 132.40 रुपये तक गिर चुका अडानी पावर अब इस निचले स्तर से 4 गुना से अधिक रिटर्न दे चुका है। पिछले एक साल में यह करीब 240 पर्सेंट उछला है। आज अडानी पावर 546.50 रुपये पर खुला और 555.50 रुपये तक पहुंचा। इसका 52 हफ्ते का हाई 589.45 रुपये है।पिछले छह महीने में अडानी पावर ने 58 फीसद से अधिक की उड़ान भरी है। वैसे तो इसने इस साल अबतक केवल 5.42 फीसद ही बढ़त हासिल की है, लेकिन पिछले तीन महीने में 42 फीसद की उछाल दर्ज की है। जबकि, पिछले 5 साल में इसने 1284 फीसद का

छप्परफाड़ रिटर्न दिया है। अगर केवल तीन साल के इसके प्रदर्शन पर नजर डालें तो इसने 890 पर्सेंट से अधिक का रिटर्न दिया है।टेक्निकल ट्रेंड्स क्या कहता है? टेक्निकल ट्रेंड्स की बात करें तो लॉन्ग टर्म के लिहाज से अडानी पावर बुलिश है। जबकि, शॉर्ट टर्म के लिए बियरिश। ऐसे में अगर इसमें निवेश करना चाहते हैं तो लॉन्ग टर्म के लिए सोचें।अडानी पावर का SWAT एनॉलिसिस SWAT एनॉलिसिस की बात करें तो अडानी पावर का स्ट्रेंथ स्कोर 14 और कमजोरी का 9 है। अपॉर्चुनिटी के लिए इसका स्कोर 10 है। क्योंकि, यह 30 दिन का एसएमए 200 दिन के एसएमए को पार कर रहा है और अभी का भाव ओपन प्राइस से अधिक है। 52 सप्ताह के निचले स्तर से उच्चतम रिकवरी और स्टॉक अच्छे वॉल्यूम के साथ 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर के करीब है। स्टॉक के लिए केवल एक बात खतरे का संकेत देती है, और वह है हाई मार्केट कैप और कम पब्लिक होल्डिंग वाली कंपनी।

222 से 26 पर आया इस बैंक का शेयर, खरीदें या रुकने में है भलाई

नई दिल्ली.चार दिन लगातार गिरने के बाद यस बैंक के शेयर आज हरे निशान पर ट्रेड कर रहे हैं। इससे पहले यस बैंक लिमिटेड के शेयरों में बुधवार तक लगातार चौथे सेशन में गिरावट का सिलसिला जारी रहा। पिछले 5 साल में यस बैंक के शेयरों में 88 फीसद से अधिक की गिरावट आई है। पांच साल पहले 22 फरवरी 2019 को ही यह स्टॉक 222 रुपये का था।अगर पिछले एक साल की बात करें तो यह स्टॉक 61 पर्सेंट ऊपर है। हालांकि, यह शेयर अपने एक साल के हाई 32.85 रुपये से 22 फीसद तक गिर गया था। यह अपने 52-सप्ताह के निचले मूल्य 14.40 रुपये से करीब 80 पर्सेंट

उछल गया है। 39 करोड़ शेयर बेचे- बीएसई के थोक सौदे के आंकड़ों से पता चलता है कि अमेरिका स्थित कार्लाइल ग्रुप की यूनिट सीए बास्क इन्वेस्टमेंट्स ने 27.10 रुपये प्रति शेयर की औसत कीमत पर यस बैंक के 39 करोड़ शेयर या 1.35 प्रतिशत हिस्सेदारी बेची है। 31 दिसंबर, 2023 तक कार्लाइल फर्म के पास यस बैंक में 6.43 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। यह आंकड़ा अब घटकर 5.08 प्रतिशत हो गया है।बीएसई के आंकड़ों के अनुसार, मॉर्गन स्टेनली एशिया (सिंगापुर) पीटीई ने 27.10 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से लगभग 30.63 करोड़ शेयर खरीदे हैं। तकनीकी विश्लेषकों का शॉर्ट टर्म में यस बैंक के शेयरों पर मोटे तौर पर मंदी का रुख रहा।

प्रभुदास लीलाधर के तकनीकी अनुसंधान विश्लेषक शिजू कूथुपालक्कल ने कहा, ÷स्टॉक में अपने हाई लेवल से करेक्शन देखा गया है। इसमें भारी मुनाफावसूली देखी गई है। अभी तत्काल सपोर्ट 24.60 रुपये के करीब होगा और अगला प्रमुख सपोर्ट 22 रुपये के करीब है।

ईजीएम से पहले बायजू रवींद्रन पर ईडी का शिकंजा, लुक आउट नोटिस जारी करने की मांग

नई दिल्ली.(एजेंसी)

बायजू रवींद्रन शुक्रवार को हाई-वोल्टेज निवेशक बैठक से पहले लुक आउट नोटिस पर नजर गड़ाए हुए हैं

ईडी ने बायजू रवींद्रन के खिलाफ लुक आउट सर्कुलर जारी करने पर जोर दिया है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि संकटग्रस्त एडटेक कंपनी के संस्थापक देश न छोड़ें।ईडी ने कहा, कंपनी ने कहा था कि उसने भारत के बाहर महत्वपूर्ण विदेशी धन भेजा और विदेशों में निवेश किया, जो कथित तौर पर फेमा, 1999 के प्रावधानों का उल्लंघन था और इससे भारत सरकार को राजस्व का नुकसान हुआ।कंपनी पर अप्रैल 2023 की छापेमारी के बाद ईडी ने एक बयान में दावा किया था कि बायजू पर फेमा सर्च से पता चला है कि कंपनी को 2011 से 2023 तक लगभग ?28,000 करोड़ का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त हुआ है। कंपनी ने विभिन्न देशों में ?9,754 करोड़ भेजे हैं। उसने इसी अवधि में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के नाम पर दावा किया था।बायजू रवींद्रन को पहले ही इंटीमेशन पर लुक आउट नोटिस जारी कर दिया गया है। बायजू के कुछ निवेशकों ने उन्हें हटाने की मांग की है। इससे रवींद्रन को इस शुक्रवार को एक हाई-वोल्टेज ईजीएम का सामना करना पड़ेगा। ईटी की रिपोर्ट में कहा गया है कि रवींद्रन पिछले तीन वर्षों से ज्यादातर दिल्ली और दुबई के बीच यात्रा कर रहे हैं।

कर्नाटक हाईकोर्ट ने थिंक एंड लर्न प्राइवेट लिमिटेड (बायजू की मूल कंपनी) द्वारा दायर एक याचिका के जवाब में एक आदेश दिया है।

इस आदेश में कहा गया है कि चुनिंदा निवेशकों द्वारा बुलाई गई 23 फरवरी की ईजीएम में पारित होने के लिए प्रस्तावित कोई भी प्रस्ताव इस याचिका की अंतिम सुनवाई और निपटारे तक अमान्य है। हालांकि, कोर्ट ने ईजीएम को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ने की अनुमति दे दी है।

एनपीएस खाते में आधार वेरिफिकेशन होगा अनिवार्य, 1 अप्रैल से लागू होगी नई व्यवस्था

नई दिल्ली.(एजेंसी)

पेंशन फंड नियामक पीएफआरडीए ने बड़ा फैसला लेते हुए राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS) के खाते का आधार आधारित सत्यापन (Verification) निवार्य कर दिया है। अब दोहरे सत्यापन यानी टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन के बाद ही खाते से निकासी संभव हो सकेगा। नई व्यवस्था एक अप्रैल से लागू होगी।इस संबंध में नियामक ने हाल ही में सर्कुलर जारी किया है। इसके मुताबिक, सेंट्रल रिकॉर्ड कीपिंग एजेंसी (सीआरए) सिस्टम में लॉग-इन करने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा उपाय किए गए हैं। ऐसा एनपीएस सदस्यों और दूसरे पक्षों के हितों को ध्यान में रख किया गया है।अब सीआरए सिस्टम में लॉग-इन करने के लिए दो सत्यायन (टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन) का इस्तेमाल होगा। सीआरए सिस्टम एक वेब आधारित प्लेटफॉर्म है, जिसे एनपीएस से संबंधित कामों के लिए तैयार किया गया है।अभी यह है व्यवस्था वर्तमान में एनपीएस सदस्यों को खाते में

लॉगइन करने के लिए उपयोगकर्ता आईडी और पासवर्ड की जरूरत होती है। इनके माध्यम से ही खाते में बदलाव और निकासी संभव होती है।

अभी केंद्र और राज्य सरकारों के नोडल अधिकारी सीआरए सिस्टम में लॉग-इन करने के लिए पासवर्ड आधारित व्यवस्था पर निर्भर हैं। इसे और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए इसे आधार आधारित सत्यापन से जोड़ा जाएगा।

Zee की बढ़ेगी मुश्किल! सुभाष चंद्रा और पुनीत गोयनका से पूछताछ के मूड में सेबी, 200 करोड़ के ट्रांजैक्शन का मामला

नई दिल्ली. जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज के प्रमोटर्स की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। दरअसल, कंपनी के प्रमोटर सुभाष चंद्रा और मैनेजिंग डायरेक्टर पुनीत गोयनका से भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) पूछताछ करने की योजना बना रहा है। इन पर मीडिया फर्म में फंड डायवर्जन के आरोप हैं। सेबी इन आरोपों की जांच कर रहा है। इसी जांच के सिलसिले में पूछताछ किए जाने की संभावना है।

जून से हो रही जांच

इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया कि सुभाष चंद्रा और पुनीत गोयनका से पूछताछ नियामक की जांच का हिस्सा है।

यह जांच अप्रैल के मध्य तक पूरी होने की उम्मीद है। पिछले साल जून में सेबी ने कहा था कि जी एंटरटेनमेंट से ?200 करोड़ संबंधित पार्टी लेनदेन के माध्यम से निकाले गए थे, लेकिन कंपनी ने प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण (सैट) के समक्ष इसका विरोध किया था। सेबी ने बाद में ट्रिब्यूनल को बताया कि वह व्यापक जांच कर रहा है।

सेबी के मुताबिक उसे पता चला है कि एस्सेल ग्रुप के चेयरमैन के तौर पर सुभाष चंद्रा ने ?4210 करोड़ का लेटर ऑफ कंफर्ट जारी किया था।

कंपनी ने इस रिपोर्ट को किया खारिज

इस बीच, हाल ही में ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में दावा किया गया कि सेबी ने जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज के खातों में 240 मिलियन या लगभग ?2000 करोड़ की गड़बड़ी का पता लगाया है। इस रकम को लेकर पूछताछ के लिए सेबी ने जी एंटरटेनमेंट के प्रमोटर सुभाष चंद्रा, उनके बेटे पुनीत गोयनका और कुछ बोर्ड सदस्यों को बुलाया है। हालांकि, कंपनी ने इस रिपोर्ट को गलत बताया। कंपनी ने कहा कि यह रिपोर्ट झूठी है।

2027 तक तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनेगा भारत, विदेशी ब्रोकरेज का अनुमान, सरकार के फैसलों पर फिदा

नई दिल्ली. अगर सबकुछ ठीक रहा तो 2027 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। विदेशी ब्रोकरेज जेफरीज ने यह अनुमान लगाया है। ब्रोकरेज को उम्मीद है कि भारत की जीडीपी अगले चार वर्षों में 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकती है। इसी के साथ देश की अर्थव्यवस्था जापान और जर्मनी से ज्यादा मजबूत हो जाएगी।

क्या कहा जेफरीज ने

जेफरीज की रिपोर्ट के मुताबिक भारत 2030 तक लगभग 10 ट्रिलियन डॉलर का मार्केट बन जाएगा। ऐसे में बड़े वैश्विक निवेशकों के लिए देश को नजरअंदाज करना ÷असंभव÷ होगा। जेफरीज ने कहा- भारत एक दशक पहले नौवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश था, जो अब 3.4 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है।

सरकार के फैसलों से लॉन्ग टर्म में फायदा

ब्रोकरेज के मुताबिक कई बड़े रिफॉर्म की वजह से देश की इकोनॉमी ने रफ्तार पकड़ी है। ब्रोकरेज ने कहा कि बैंकरप्सी लॉ, जीएसटी स्ट्रक्चर, रियल एस्टेट के लिए रेरा एक्ट और नोटबंदी जैसे रिफॉर्म लॉन्ग टर्म के लिए अच्छे थे। हालांकि, शॉर्ट टर्म में इसका सही इम्पैक्ट नहीं रहा।

जेफरीज ने कहा- अगले पांच वर्षों में भारत की जीडीपी के न केवल 6त्न की दर से वृद्धि होने का अनुमान है बल्कि देश लीडर की भूमिका में भी होगा क्योंकि अधिकांश बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश की विकास दर में गिरावट आ सकती है।

मोदी सरकार ने बढ़ाया गन्ने का दाम तो गिर गए चीनी कंपनियों के शेयर

मोदी सरकार ने बुधवार को 2024-25 सत्र के लिए गन्ने का एफआरपी 25 रुपये बढ़ाकर 340 रुपये प्रति क्विंटल करने की मंजूरी दे दी थी दी। आज शुगर स्टॉक्स पर इसका असर देखने को मिल रहा है।

नई दिल्ली. केंद्र सरकार के 2024-25 सत्र के लिए गन्ने का उचित व लाभकारी मूल्य **(FRP)** 25 रुपये बढ़ाकर 340 रुपये प्रति क्विंटल करने के एक दिन बाद गुरुवार को सुबह के कारोबार में चीनी कंपनियों के शेयर तीन पर्सेंट तक गिर गए। बीएसई पर लिस्टेड राणा शुगर्स का शेयर 3.21 पर्सेंट गिरकर 25.35 रुपये पर, मवाना शुगर्स का शेयर 2.81 पर्सेंट गिरकर 101.70 रुपये पर, राजश्री शुगर्स एंड केमिकल्स का शेयर 2.50 पर्सेंट गिरकर 72.62 रुपये पर आ गया।श्री रेणुका शुगर्स का शेयर 2.41 पर्सेंट गिरकर 48.50 रुपये पर, केसीपी शुगर एंड इंडस्ट्रीज का शेयर 2.20 पर्सेंट गिरकर 40.87 रुपये पर और ईआईडी पैरी (इंडिया) का शेयर 1.57 पर्सेंट गिरकर 629.20 रुपये पर आ गया। डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज का शेयर 1.15 पर्सेंट की गिरावट के साथ 403.15 रुपये प्रति शेयर पर, बलरामपुर चीनी मिल्स का शेयर 1.12 पर्सेंट गिरकर 376.50 रुपये पर, धामपुर शुगर मिल्स 0.96 पर्सेंट की गिरावट के साथ 248 रुपये पर और त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज 0.76 पर्सेंट की गिरावट के साथ 347.80 रुपये प्रति शेयर पर आ गया।अब तक की सबसे बड़ी एफआरपी- मोदी सरकार ने बुधवार को 2024-25 सत्र के लिए गन्ने का एफआरपी 25 रुपये बढ़ाकर 340 रुपये प्रति क्विंटल करने की मंजूरी दे दी थी दी। गन्ने का नया सत्र अक्टूबर से शुरू होता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के 2014 में सत्ता में आने के बाद यह अब तक की सबसे बड़ी एफआरपी है।

मात्रा के संदर्भ में यह दूसरी बार है, जब मोदी सरकार ने एफआरपी में एक बार में 25 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की है। गन्ने की एफआरपी बढ़ाने का फैसला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) की बैठक में लिया गया। संशोधित एफआरपी एक अक्टूबर 2024 से लागू होगी। आधिकारिक बयान के मुताबिक,%% केंद्र सरकार के इस फैसले से पांच करोड़ से अधिक गन्ना किसानों (परिवार के सदस्यों सहित) और चीनी क्षेत्र से जुड़े लाखों अन्य लोगों को फायदा होगा.

पुराने वाहनों को स्क्रैप कराने के नियमों में बड़े बदलाव की तैयारी

नई दिल्ली. पुराने वाहनों को स्क्रैप कराने के नियमों में बड़ा बदलाव हो सकता है। इसके तहत सरकार ऐसे वाहन मालिकों को अधिक फायदा दे सकती है, जो अपने पुराने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को बेचने के बजाए स्क्रैप कराएंगे। इसके लिए सरकार मौजूदा स्क्रैपेज नीति की समीक्षा कर रही है। मामलों से जुड़े दो अधिकारियों ने यह जानकारी दी।दरअसल, वाहन मालिकों को स्क्रैपिंग के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहित करने के लिए सड़क परिवहन मंत्रालय उन्हें अतिरिक्त लाभ देने को लेकर चर्चा कर रहा है।

कैबिनेट से इसकी मंजूरी जल्द ली जाएगी। अधिकारियों ने बताया कि संशोधित नियम मई तक लागू हो सकते हैं।ग्रामीण क्षेत्रों में बेच रहे पुराने वाहन- गौरतलब है कि देश में 2021 में जारी स्क्रैपे नीति में निर्माताओं और राज्य सरकारों की ओर से दिए जाने वाले प्रोत्साहन का प्रस्ताव था। सरकार का अनुमान लगाया था कि स्क्रैपिंग से लगभग 10,000 करोड़ रुपये का निवेश आएगा और 35 हजार नए रोजगार सृजित होंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया है। मालिकों ने पुराने वाहनों को स्क्रैप करने के बजाय ग्रामण क्षेत्रों में बेचना जारी रखा है।वाहन मालिक नहीं ले रहे दिलचस्पी मौजूदा नीति के तहत, पुराने वाहन का स्क्रैप मूल्य नए वाहन की एक्स-शोरूम कीमत का चार से छह प्रतिशत तक होता है।

स्क्रैपिंग के बाद अधिकृत केंद्र वाहन मालिकों को प्रमाणपत्र देता है। इनमें से अधिकांश केंद्रों पर उपयोग का स्तर 20त्न से नीचे बना हुआ है। जानकारों का कहना है कि सीमित वित्तीय लाभ की वजह से वाहन मालिक स्क्रैपिंग में अधिक दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। इसके अलावा नियमित वाहन फिटनेस परीक्षण की कमी भी भारत में कम स्क्रैपेज का एक कारण है।ऐसे हो सकता है फायदा मामले जुड़े दोनों अधिकारियों ने बताया कि नई योजना के तहत सरकार और ऑटोमोबाइल निर्माता दोनों उपभोक्ताओं को प्रोत्साहन राशि उपलब्ध करा सकती है। सरकार की ओर से यह लाभ कर छूट के रूप में मिल सकता है। वहीं, ऑटो निर्माताओं कीमत पर छूट उपलब्ध करा सकते हैं।

इसका खाका तैयार किया जा रहा है।इन देशों में नीति सफल बताया जा रहा है कि सरकार अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, कनाडा और जर्मनी जैसे देशों की तर्ज पर वाहन स्क्रैप को बढ़ावा दे सकती है। इन देशों ने स्क्रैपिंग को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार और वाहन निर्माताओं द्वारा प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराई जाती है। हाल के दिनों में अमेरिका में कबाड़ हुए वाहनों के लिए नकद देने का कार्यक्रम शुरू किया गया था, जो बेहद सफल रहा था।

थाना कोतवाली द्वारा मो0सा0 चोरी करने वाले एक शातिर चोर को गिरफ्तार कर चोरी की 03 मो0सा0 बरामद

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-विगत समय से शिवपुरी न्यायालय परिसर एवं तहसील परिसर में लगातार हो रही मोटर सायकिल चोरियों के संबंध में पुलिस अधीक्षक शिवपुरी रघुवंश सिंह भदौरिया व्दारा लगातार मोनिटरिंग कर मोटर सायकिल चोरों को पकड़ने हेतु जिले के समस्त थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया था । इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री संजीव मूले एंव नगर पुलिस अधीक्षक श्री संजय चतुर्वेदी के कुशल मार्गदर्शन में कोतवाली टीआई विनय यादव व्दारा टीमें घटित की गयी जो कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत चोरी की घटनाओं की मोडस ऑपरेन्डी पता किया जो ज्ञात हुआ कि कोतवाली क्षेत्र से अधिकतम मोटर सायकलें न्यायालय परिसर एवं अन्य जगह, से चोरी होना पायी गयी जो शहर के तमाम सीसीटीव्ही कैमरों को देखा गया जिसमें अज्ञात चोर को सिंहनिवास तरफ जाते देखा । मुखविर की सूचना से ज्ञात हुआ कि दिनांक 18.02.24 को महोत्सव

गार्डन से मोटर सायकल चोरी की गई है वह व्यक्ति ग्राम पूरबढाना थाना सिरसौद क्षेत्र का रहने वाला हैं जिसकों आज दिनांक 23.02.24 को सिंहनिवास पुल के नीचे से मय मोटर सायकल के पकड़ा गया जिससे मोटर सायकल के कागजात मांगे तो गोलमोल जवाब देकर गुमराह करने लगा जो आरोपी पर संदेह होने से सख्ती से पूछताछ की गई तो उसने उक्त मोटर सायकल महोत्सव गार्डन पोहरी रोड शिवपुरी से चोरी करना बताया उक्त आरोपी से शहर में लगातार हो रही मोटर सायकल चोरी के संबंध में पूछताछ की तो उसने अन्य दो मोटर सायकलें कोर्ट के सामने से चोरी करना बताया । उक्त आरोपी से एक मोटर सायकल सिंहनिवास पुल के नीचे से एवं अन्य दो मोटर सायकलें घर पर बने कमरे में रखा होना बताया उनको आरोपी के घर जाकर बरामद किया गया एवं आरोपी को गिर. किया गया आरोपी से अन्य चोरी की मोटर सायकलों के संबंध में पूछताछ की जा रही है

सराहनीय भूमिका:- उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी थाना कोतवाली विनय यादव, उनि0 सुमित शर्मा, सउनि अमृतलाल, प्र0आर0 142 नरेश यादव, प्र0आर0 15 रघुवीर पाल, आर0 अजीत राजावत, आर0 भूपेन्द्र यादव, आर0 भोला सिंह ठाकुर, आर0 राहुल सिंह आर0 शिवांशु यादव, आर0 महेन्द्र तोमर, आर. टिंकू सिंह आर. चालक रामजी पाराषर की विशेष भूमिका रही ।

बरामद की गयी मोटर सायकिलों के **इंजन नंबर –**

1 बजाज प्लेटिना इंजन क्र॥5515
2 हीरो आई स्मार्ट इंजन नं 03032
3हीरो डीलेक्श इंजन नं. ॥114816

सरपंच पर हत्या के प्रयास मे फरार 10 हजार रुपये के इनामी सरपंच पति को पिस्टल के साथ किया गिरफ्तार फरार दो आरोपियों की तलाश जारी

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-पुलिस अधीक्षक शिवपुरी रघुवंश सिंह भदौरिया द्वारा गंभीर अपराधों मे फरार अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु एवं गंभीर अपराधों मे तुरंत कार्यवाही हेतु समस्त थाना प्रभारियों को निर्देश दिये हैं । जिले मे शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये पुलिस अधीक्षक द्वारा समस्त पुलिस अधिकारियों को सतर्क रहने हेतु एवं घटना की सूचनाओं पर तुरंत कार्यवाही करने हेतु लगातार दिशा निर्देश दिये जा रहे हैं । उक्त निर्देशों के पालन मे पुलिस थाना कोतवाली द्वारा हत्या के प्रयास के अपराध मे 10 हजार के फरार इनामी आरोपी को गिरफ्तार किया गया है ।दिनांक 17.02.24 के रात्रि करीवन 11.00 बजे शहर के चन्द्रा कालोनी के निवास संजय रावत के घर के बाहर अपनी गाडी से आकर जान से मारने की नियत से आरोपीगण प्रभात रावत, प्रमोद रावत, प्रगट रावत निवासीगण सिंहनिवास के द्वारा पिस्टल से फायर कर हत्या का प्रयास करने का अपराध घटित किया गया था, जिसपर से थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 122/ 24 धारा 307,294,34 भादवि का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया आरोपीगण पूर्व में अपराध घटित कर चुके थे, मामले की गंभीरता को देखते हुये पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा आरोपीगणों की तत्काल गिरफ्तारी हेतु तीनों आरोपीगण पर दस दस हजार रूपये का इनाम घोषित किया गया, जिस पर से तत्परता दिखाते हुये पुलिस अधीक्षक के आदेश के पालन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव मूले एंव नगर पुलिस अधीक्षक संजय चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में कोतवाली टीआई विनय यादव व्दारा टीम घटित की गयी एवं आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु हर संभव स्थानों पर दबिस दी गई जो आज दिनांक 23.02.24 को मुखविर की सूचना पर आरोपी प्रभात रावत पुत्र करन सिंह रावत उम्र 30 साल निवासी सिंहनिवास को सिंहनिवास पुल के पास खड़े होने की सूचना पर तत्काल टीम रवाना कर मौके से गिरफ्तार किया गया एवं आरोपी के कब्जे से एक पिस्टल को विधिवत जप्त किया गया ।

जप्त मसरूका एक 32 बोर देशी पिस्टल कीमती 30000/रु उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी थाना कोतवाली विनय यादव, उनि आदित्य प्रताप सिंह, उनि सुमित शर्मा, सउनि महेन्द्र कुशवाह, प्रआर राजवीर सिंह, आर अजय यादव, आर देवेन्द्र रावत, आर महेन्द्र तोमर, आरण नरेन्द्र रावत, आर टिकू सिंह, आर सलमान खान, आर चालक रामजी पाराशर की विशेष भूमिका रही ।

टैक्सी यूनियन जिला अध्यक्ष के पुत्र ने पुलिस अधीक्षक को हाथ से बनाई पेंटिंग गिफ्ट

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- हर व्यक्ति के पास अपना अपना एक प्रतिभा होती है किसी के पास नृत्य करने की प्रतिभा होती है तो किसी के पास बहुत ही सुंदर गायन की प्रतिभा होती है किसी के पास अच्छा खेलने की प्रतिमा होती है तो किसी के पास अच्छा लिखने की प्रतिभा होती है एक छोटे से परिवार में जन्मे लव धाकड़ जिनके पिता टैक्सी चला कर अपने परिवार का जीवन यापन करते हैं और कई वर्षों से टैक्सी यूनियन के जिला अध्यक्ष भी रहे हैं और जो की शहर के लगभग सभी अधिकारियों से परिचित भी हैं आज उनके बेटे लव धाकड़ द्वारा शिवपुरी पुलिस अधीक्षक को अपने हाथों द्वारा बनाया गया उनका छायाचित्र भेंट की लव धाकड़ द्वारा बनाया गया पुलिस अधीक्षक की छायाचित्र इतना सुंदर और देखने लायक था कि पुलिस अधीक्षक द्वारा लव धाकड़ की प्रतिभा का सम्मान किया और उनका फूल माला पहनाकर उनकी प्रतिभा का सम्मान किया जिस पर उनके पिता का मन खुशियों से भर गया कि आज उनके पुत्र का सम्मान शिवपुरी जिले के पुलिस अधीक्षक द्वारा किया जा रहा है इस मौके पर टैक्स यूनियन के जिला अध्यक्ष बनवारी लाल धाकरे के अलावा टैक्स यूनियन के सचिव करण सिंह कोषाध्यक्ष हरिओम शाक्य उपाध्यक्ष अरुण शर्मा एवं उनके टैक्स यूनियन के अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे

दबंग कर रहे पड़ोसियों को परेशान छोटी-छोटी बातों पर देते हैं जान से मारने की धमकी

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- खबर शिवपुरी जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले मनियर से है जहां रात्रि 10ः00 बजे लक्ष्मी कुशवाह अपने घर के बाहर बैठी हुई थी तभी पड़ोस में निवास करने वाले धर्मेन्द्र पुत्र लल्ला तोमर, प्रीति तोमर, साहित्य तोमर, अभयसिंह उर्फ विट्टी, शिवप्रताप तोमर व महेन्द्र उर्फ छोटू तोमर पुत्रगण चंदनसिंह तोमर एकराय होकर आये और लक्ष्मी और परिवार के सदस्यों मां बहन की गाली गलोच करने लगे जब गालियां देने से मना किया तो साथ लाठी डंडो से बेहरमीपूर्वक मारपीट करने लगे जिससे लक्ष्मी के यहां गंभीर मूदी चोटे आई है लक्ष्मी बचाने के लिए संदीप राठौर और मुरारी कुशवाह बचाने आये तो उनके साथ भी बुरी तरह मारपीट कर दी जिससे उनके यहां भी चोटे आई है। उक्त घटना के समय राजेश रावत और जितेन्द्र राठौर आ गये थे जिन्होंने घटना देखी है।घटना की रिपोर्ट पुलिस थाना कोतवाली शिवपुरी में एफआईआर नं. 0132 दिनांक 23.02.2024 धारा 294, 323, 336, 506,34 भादवि का कायम हुआ है। लेकिन घटना में सम्मिलित अन्य दो आरोपी शिव प्रताप तोमर व महेन्द्र उर्फ छोटू तोमर पुत्रगण चंदनसिंह तोमर निवासी मनियर तालाब के पास शिवपुरी के नाम दर्ज नहीं किये गये हैं आरोपीगण खुलेआम घूम रहे है। जिसके कारण पुलिस परिवार ने अपनी रक्षा के लिए पुलिस अधीक्षक के यहां न्याय की गुहार लगाइ

पुलिस पर हमला करने वाले आरोपी हुए गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर , गत दिवस पहले थाना मायापुर पुलिस पर जानलेवा हमला करने वाले आरोपियों में से आज 2 आरोपियों को थाना मायापुर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।जानकारी के अनुसार आज से 3 दिन पहले सीएम हेल्पलाइन की शिकायत बंद करवाने गई मायापुर पुलिस की टीम पर ग्राम बनियानी निवासी राजेंद्र लोधी, आनंद लोधी,सत्येंद्र लोधी,जयंती लोधी,अवस्था बाई लोधी ने अपने घर के अन्य 3/4 सदस्यों के साथ पुलिस पर कुल्हाड़ी और लाठियों से हमला कर दिया था

जिस पर से थाना 307,147,148,149,294,186 ,353,34 भादवि का मामला दर्ज किया था,आज मुखबिर ने पुलिस को सूचना दी कि फरार आरोपियों में से दो आरोपी सत्येंद्र और आनंद अपने सागौन वाले खेत पर हैं जिन्हे पुलिस ने घेराबंदी कर के पकड़ लिया,पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त कुल्हाड़ी और लाठी जप्त की है, गिरफ्तार करने के बाद आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश किया जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है।आरोपियों की गिरफ्तारी में टी आई ओपी आर्य, एसआई अजय पटेल, एसआई लोकनाथ भगत,एएसआई शेख महबूब, एएसआई प्रताप गुर्जर, योगेंद्र,मुरारी,विक्रांत,सहदेव,आनंद, कप्तान,सैनिक अवधेश व निखिल की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

विगत 07 दिवस में खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा की गई ताबड़तोड़ कार्यवाही

150 से अधिक दूध, दुग्ध पदार्थ, मिठाईयों, मसालों एवं अन्य खाद्य पदार्थों के लिए गए नमूने 02 प्रतिष्ठानों के खाद्य पंजीयन किये गये निलंबित एक दर्जन से अधिक प्रतिष्ठानों दिए गए सुधार सूचना नोटिस

दैनिक पुष्पांजली टुडे

खाद्य कारोबार करने के लिये लायसेंस व रजिस्ट्रेशन लेना है जरुरी खाद्य

मिलावटखोरों के विरुद्ध जिला बदर की कार्यवाही की तैयारी

भिण्ड । उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर में प्रचलित अवमानना याचिका के संदर्भ में मुख्य सचिव म0प्र0 शासन द्वारा खाद्य पदार्थों में हो रही मिलावट को रोकने के लिये मिलावटखोरों के विरुद्ध कडी कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। जिला भिण्ड में कार्यवाही हेतु पृथक से आयुक्त खाद्य सुरक्षा प्रशासन भोपाल द्वारा 06 खाद्य सुरक्षा अधिकारियों का दल भेजा गया है। विगत 07 दिवस में खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है और 150 से अधिक दूध, दुग्ध पदार्थ, मिठाईयों, मसालों एवं अन्य खाद्य पदार्थों के नमूने लिये गये हैं। 02 प्रतिष्ठानों के खाद्य पंजीयन निलंबित किये गये हैं, जबकि 05 प्रतिष्ठान सील्ड किये गये हैं। कार्यवाही दौरान 2800 किलो मसाले, 400 किलो मावा तथा 100 किलो घी वनस्पति जिनकी कीमत 5 लाख रुपये से अधिक है, जप्त किया गया है। एक दर्जन से अधिक प्रतिष्ठानों पर उचित साफ-सफाई न मिलने के कारण उनको सुधार सूचना नोटिस भी जारी किये गये हैं।कार्यवाही दौरान ऐसे प्रतिष्ठान जिन पर मिलावट की सामग्री मिली है एवं पूर्व में भी मिलावटखोरी में लिप्त रहे हैं, ऐसे 03 मिलावटखोरों के विरुद्ध जिला बदर के नोटिस कलेक्टर भिण्ड द्वारा जारी किये गये हैं।खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के अंतर्गत किसी भी तरह के खाद्य कारोबार करने के लिये लायसेंस व रजिस्ट्रेशन लेना अनिवार्य है। ऐसे खाद्य कारोबारकर्ता जिनका वार्षिक टर्नओवर 12 लाख से कम है, उनको खाद्य रजिस्ट्रेशन और जिनका कारोबार 12 लाख से अधिक है, उनको खाद्य लायसेंस लेना अनिवार्य होता है। खाद्य लायसेंस की प्रक्रिया पूरी तरह से ऑनलाइन है। खाद्य कारोबारकर्ता वेबसाईट पर जाकर खाद्य पंजीयन करा सकते हैं। बिना खाद्य लायसेंस / रजिस्ट्रेशन कारोबार करने पर 02 लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान है तथा प्रतिष्ठान भी सील्ड किया जा सकता है।

गाजे बाजे के साथ मंदिर शिखर पर चढ़ाई ध्वजा

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बाली. नगर स्थित आईमाता की नवीं वडेर की चौथी वर्षगांठ पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम हुए। दोनों मन्दिरों में गादी बदलकर व ध्वजा चढ़ाई। सीरवी समाज के खेता महाराज ने बताया कि गुरुवार को पंडित अवधेश महाराज के सानिध्य में पूजा अर्चना की गई। प्रातः 7 बजे से दोनों मन्दिरों में बोलीदाताओं ने गादी चढ़ावा एवं शिखरों पर ध्वजा चढ़ाई। समाज के कोटवाल नथाराम सोलंकी व जमादारी कानाराम काग के नेतृत्व में पुजारियों ने महाआरती की। उसके पश्चात जूनी बर्डे, नवीं बढेर, जैकलजी मंदिर में आरती की गई। नगरपालिका अध्यक्ष भरत चौधरी, पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष जगाराम, इन्दु चौधरी, लकमाराम, आईजी बढेर समिति अध्यक्ष चेलाराम चौधरी सीरवी, आईजी युवा समिति अध्यक्ष अशोक गहलोत, अधिवक्ता भेराराम चौधरी, दुदाराम चौधरी, पंचों युवा कार्यकर्ता संगठित व धर्म कार्य में सहभागी बने। इस मौके सीरवी समाज आईजी बढेर समिति , सीरवी आईजी युवा समिति, युवा वर्ग, महिला वर्ग, स्वजातीय महानुभावों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

जबेरा विधानसभा के विभिन्न ग्रामों में पहुंचकर मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने समस्याएं सुनी

पुष्पांजली टुडे

दमोह। जबेरा विधानसभा से विधायक मध्य प्रदेश शासन में राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार धर्मेन्द्र सिंह लोधी जबेरा विधानसभा के जनपद जबेरा के ग्राम घटेरा ,मनगुवा मानगढ़,बनवार पहुंचे घटेरा में स्थानीय कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए एवं घटेरा ग्राम के लोगों ने बताया कि लगभग 3 माह से ट्रांसफर जला हुआ है मंत्री लोधी ने दूरभाष के माध्यम से उच्च अधिकारियों को जल्द ही ट्रांसफार्मर बदलवाने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान बनवार पहुंचे जहां श्रीमद् भागवत कथा में सम्मिलित होकर कहा कि 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र की श्रेणी सम्मिलित होंगा। भगवान श्री कृष्ण ने अपनी बाल लीलाओं से सभी का मनमोह लिया था और राक्षसों का बध करके धर्म की रक्षा की। भगवान श्री कृष्ण गायों की सेवा करते थे।और जब इन्द्र देव को लगने लगा था कि मैं ही सबसे शक्तिशाली हूं तब श्री कृष्ण ने इन्द्र देव की पूजा बंद करवाकर गोवर्धन की पूजा की थी जिससे क्रोधित होकर इंद्रदेव ने अधिक बर्षा करवाई फिर श्री कृष्णा ने गोवर्धन पर्वत को अपनी एक उंगली पर उठाकर समस्त गोकुलवासियों की रक्षा की थी।इसलिए हम कभी घमंड ना पालें और हरि का भजन करें प्रभु की शरण में सभी पाप कट जाते हैं।

जिन बच्चों के लिए धन जमा कर रहे हो, उन पर जब दस-दस भूत लगेंगे तो आपके बच्चे जीने-खाने नहीं पाएंगे, सारी मेहनत बेकार जाएगी

बंगाल दुःखहर्ता सन्त उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज ने अधिकृत यूट्यूब चैनल जयगुरुदेवयूकेएम पर लाइव प्रसारित संदेश में बताया कि आप जितने भी कार्यकर्ता हो, गुरु का काम अगर करोगे तब तो गुरु का हाथ आपके ऊपर रहेगा नहीं तो काल और दयाल की यह लड़ाई है। कलयुग ऐसे नहीं जाने वाला है। कलयुग जब जोर लगाएगा तब परमार्थ से आपको हटाएगा। गुरु की दया अगर ठुकराने की कोशिश करोगे तो धोखा खा जाओगे। आप जब काम करोगे, लोगों से मिलोगे, अच्छी-अच्छी बातें लोगों को आप बताओगे, सतसंग सुनाओगे, भाषण बाजी करोगे तो आपको सम्मान मिलेगा लेकिन गुरु के मिशन, संगत के अनुशासन को आप भूल जाओगे तो एक न एक दिन सब (सेवा, कमाई) खत्म हो जाएगा। लाभ और मान क्यों चाहे, पड़ेगा फिर तुझे देना। यह परमार्थी रास्ता है।**सभी को एक लक्ष्य अपने घर जाने का बनाना है-**आप सब लोगों को अपना लक्ष्य कहां का बनाना चाहिए? अपने असला घर जाने का। अपना घर, अपना वतन यहां नहीं है। अपने को धन्य समझना चाहिए कि चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद आपको एक अवसर (मनुष्य शरीर) मिल गया। आप बहुत से लोगों को यह नहीं मालूम है कि पिछले जन्म में कहां थे- कीड़ा-मकोड़ा, सांप, गोजर, बिच्छू थे या क्या थे, यह आपको नहीं पता है। आप समझो ये चौरासी लाख योनीयां हैं जिनमें (जीवात्मा को) भटकना पड़ता है।

प्रेमियो! प्रेत योनियों में जाने से लोगों को बचाना है-बगैर समय पूरा किये हुई मृत्यु को अकाल मृत्यु कहते हैं। आज घर-घर इतने प्रेत क्यों हो गए? एक-एक आदमी पर कई-कई भूत क्यों लग रहे हैं? यह जो हिंसा-हत्या, आदमी मारे जा रहे हैं, मुर्गा बकरा भैंसा गाय बैल काटे जा रहे हैं, सब प्रेत योनियों में जा रहे हैं। प्रेत योनि में बड़ी तकलीफ होती है। पेट बड़ा होता है, नाक बहुत छोटा होता है। उनका भोजन खुशबू सुगंधी होती है। भूख हमेशा लगी रहती है। पेट नहीं भरता है, परेशान रहते हैं, परेशान करते रहते हैं। प्रेत योनि से लोगों को बचाना पड़ेगा। जिन बच्चों के लिए इतना मेहनत करते हो कि मेरे बच्चे का नाम हो जाएगा, मैं धन कमा कर रख लूंगा, बढ़िया मकान गाड़ी घोड़ा छोड़ करके जाऊंगा, इसे सम्मान मिलेगा, वह बच्चे जीने और खाने नहीं पाएंगे, जब एक-एक पर 10-10 भूत लगेंगे तब बच्चे-बच्चियों, कार्यकर्ताओं! सारी मेहनत बेकार चली जाएगी। इसलिए अपने और अपने बच्चों के उत्तम भविष्य के लिए आपको एक निशाना बना करके काम करना है। गुरु का गुलाम बन कर सेवा करो।**सभी प्रदेशों के लोग एक अनुशासन बना लो, उसके अनुसार काम करो-**देखो कोई भी चीज हो, चाहे संस्था दफ्तर घर समाज कोई हो, जब उसमें अनुशासन चलता है, अनुशासन में जो लोग काम करते हैं,

नो बॉल को लेकर अंपायर पर भड़के वानिंदु हसरंगा, कहा- आप ये नहीं देख सकते तो दूसरी जॉब देखो

नई दिल्ली. श्रीलंका और अफगानिस्तान के बीच तीन मैचों की टी20 इंटरनेशनल सीरीज का आखिरी मुकाबला उस समय विवादों में आ गया, जब स्क्वॉयर लेग अंपायर ने श्रीलंका की पारी के आखिरी ओवर में एक नो बॉल को लीगल डिलीवरी करार दिया। गेंद को देखकर आसानी से कहा जा सकता था कि ये हाइट की नो बॉल थी, लेकिन अंपायर ने इसे लीगल करार दिया और खामियाजा श्रीलंका ने भुगता, क्योंकि टीम को तीन रनों से हार मिली। वहीं, मैच के बाद श्रीलंका की टी20 टीम के कप्तान वानिंदु हसरंगा ने अंपायर पर निशाना साधा और उनको नई जॉब तलाशने के लिए कहा। वानिंदु हसरंगा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अंपायर लिंडन हैनिबल को दूसरी नौकरी ढूंढनी चाहिए, क्योंकि दांबुला में अफगानिस्तान के खिलाफ तीसरे टी20 में रोमांचक मोड़ पर खड़े मैच के आखिरी ओवर के दौरान हैनिबल ने हाई फुलटॉस को लीगल डिलीवरी माना था। अफगानिस्तान के तेज गेंदबाज वफादार मोमंद की गेंद कामिंदु मेंडिस की कमर के ऊपर से गई थी। बल्लेबाज ने थोड़ा सा आगे निकलकर खेलने की कोशिश जरूर की, लेकिन आईसीसी की प्लेइंग कंडीशन्स के मुताबिक, अगर वे पोपिंग क्रीज में सीधे भी खड़े होते तो भी गेंद नो बॉल ही दी जानी थी। हसरंगा ने मैच के बाद कहा, इंटरनेशनल मैच में इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए। यदि यह (कमर की ऊंचाई के करीब) होता, तो कोई समस्या नहीं हो, लेकिन जो गेंद इतनी ऊपर जा रही है... अगर वह थोड़ी ऊपर जाती तो बल्लेबाज के सिर पर लगती। यदि आप यह नहीं देख सकते हैं, तो वह अंपायर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए उपयुक्त नहीं है। अगर वह कोई दूसरा काम करता तो ज्यादा अच्छा होता। जब ऐसा हुआ तब श्रीलंका को आखिरी तीन गेंदों पर 11 रनों की जरूरत थी। चूंकि डिलीवरी को वैध माना गया तो उन्हें अंतिम दो में 11 रनों की आवश्यकता थी।अगली गेंद वाइड रही, जबकि पांचवीं गेंद पर कोई रन नहीं बना। आखिरी गेंद पर छक्का लगा, लेकिन श्रीलंका को तीन रनों से हार मिली। अगर वह गेंद नो बॉल होती तो शायद मैच का नतीजा कुछ और हो सकता था, क्योंकि उस गेंद पर टीम को एक रन मिलता और अगली गेंद फ्री हिट होती तो वहां बल्लेबाज के आउट होने के चांस ना के बराबर होते।

विराट कोहली या बाबर आजम किसकी कप्तानी में खेलना चाहेंगे मोहम्मद आमिर? जवाब जीत लेगा दिल

नई दिल्ली.एजेंसी

पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर को भारतीय क्रिकेटरों से कुछ ज्यादा ही लगाव है, खासकर विराट कोहली और रोहित शर्मा से। वाइपर्स स्ट्रेंट अप विद मलिक शो में मोहम्मद आमिर और शाहीन अफरीदी एक एपिसोड में साथ आए और शोएब मलिक के सवालों के जवाब दिए। इस दौरान एक सवाल ऐसा था, जिस पर मोहम्मद आमिर का जवाब इंडियन क्रिकेट फैन्स को काफी ज्यादा पसंद आ रहा है। मोहम्मद आमिर से जब पूछा गया कि किसकी

कप्तानी में खेलना बेहतर है विराट कोहली या बाबर आजम? तो इस पर उन्होंने विराट का नाम लिया, हालांकि आमिर कभी भी विराट की कप्तानी में खेले नहीं हैं। इसके अलावा कवर ड्राइव को लेकर जब पूछा गया कि दोनों में से बेहतर कवर ड्राइव कौन खेलता है, तो इस पर भी आमिर का जवाब विराट कोहली ही था, हालांकि शाहीन ने बाबर का नाम लिया और इस पर आमिर का रिऐक्शन भी खूब वायरल हुआ था।

मोहम्मद आमिर ने अपनी पसंदीदा फ्रेंचाइजी टीम रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) को बताया। इसके अलावा शोएब मलिक ने जब पूछा कि रोहित शर्मा का पुल शॉट या मोहम्मद रिजवान का फ्लिक शॉट? इस पर जैसे ही शाहीन अफरीदी ने जवाब देना शुरू किया कि दोनों शॉट अलग हैं, तो तुरंत आमिर ने उन्हें बीच में ही रोक दिया और कहा कि सच बोलो। रोहित शर्मा पुल शॉट इतने प्यार से मारते हैं। वो तेज गेंदबाज को भी पुल ऐसे मारते हैं, जैसे उनके पास कितना टाइम हो।

क्या विराट कोहली पांचवें टेस्ट के लिए करेंगे भारतीय स्क्वॉड में वापसी? अकाय कोहली के जन्म के बाद क्यों आ रही हैं ऐसी खबरें

नई दिल्ली।

विराट कोहली इंग्लैंड के खिलाफ मौजूदा टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय स्क्वॉड का हिस्सा नहीं हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की सीरीज के पहले दो टेस्ट मैचों के लिए जब स्क्वॉड का ऐलान किया गया था, तब विराट कोहली इसका हिस्सा थे। इसके बाद उन्होंने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) से पर्सनल लीव मांगी और पहले दो टेस्ट से बाहर हो गए। आखिरी तीन टेस्ट मैचों के लिए स्क्वॉड के ऐलान से पहले लगातार चर्चा हो

रही थी कि क्या विराट की वापसी होगी? विराट ने अपनी छुट्टी बढ़ाई और वह बचे हुए तीन टेस्ट मैचों से भी बाहर हो गए। विराट कोहली दूसरी बार पिता बने हैं, 15 फरवरी को अनुष्का शर्मा ने बेटे को जन्म दिया, जिसका नाम अकाय कोहली रखा गया है। सीरीज का चौथा टेस्ट मैच 23 फरवरी से रांची में खेला जाना है और इसमें विराट की वापसी मुश्किल है, लेकिन अब खबर ये आ रही है कि वह पांचवें टेस्ट में स्क्वॉड में वापसी कर सकते हैं। सीरीज का आखिरी टेस्ट मैच 7 मार्च से धर्मशाला में खेला जाना है। क्या विराट कोहली धर्मशाला टेस्ट मैच खेलने के लिए टीम में वापसी करेंगे?

बेन स्टोक्स रांची की पिच को देखकर हैरान, बोले- मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा

नई दिल्ली।

इंग्लैंड की टेस्ट टीम के कप्तान बेन स्टोक्स रांची में भारत के खिलाफ आगामी चौथे टेस्ट की पिच से हैरान दिखे। उन्होंने दावा किया कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि यह कैसा बर्ताव करेगी। 32 वर्षीय ऑलराउंडर ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि ट्रैक पर बहुत सारी घास है। हालांकि, जब करीब से देखा तो वहां काफी दरारें थीं। हैदराबाद में सीरीज के पहले टेस्ट की पिच में काफी टर्न था। हालांकि, विशाखापट्टनम और राजकोट में अगले दो मैचों के लिए पिच काफी हद तक सही थी। इन दोनों मैचों में काफी रन बने, लेकिन बैजबॉल यहां फेल रही। पिछले टेस्ट मैच में इंग्लैंड ने सीरीज में पहली बार दो तेज गेंदबाजों को मौका दिया, लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि वे रांची में किस संयोजन के साथ जाते हैं। चौथे टेस्ट से पहले

बीबीसी स्पोर्ट से बात करते हुए स्टोक्स ने पिच के बारे में ये दावा किया, मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा। मुझे कोई अंदाजा नहीं है, इसलिए मुझे नहीं पता कि क्या हो सकता है। यदि आप विपरीत छोरों के एक तरफ नीचे देखते हैं तो यह उससे बिल्कुल अलग दिखता है, जिसे मैं देखने का आदी हूं, खासकर भारत में।

उन्होंने आगे बताया, ÷चेंजिंग रूम से यह हरा और घास वाला दिखता था, लेकिन फिर आप वहां जाते हैं तो यह अलग दिखता है। बहुत डार्क और टेढ़ा-मेढ़ा और इसमें काफी दरारें थीं।

इंग्लैंड की टीम ने हैदराबाद में पांच मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट 28 रन से जीता, लेकिन इसके बाद वाइजैग और राजकोट में इंग्लैंड को करारी हार का सामना करना पड़ा। इस तरह अब भारतीय टीम सीरीज में 2-1 से आगे चल रही है और सीरीज के अभी भी दो मुकाबले बाकी हैं। भारतीय टीम रांची में ही सीरीज पर कब्जा करने के प्रयास से उतरेगी, जबकि इंग्लैंड की टीम वापसी करना चाहेगी।

कश्मीर में क्रिकेट खेलते नजर आए सचिन तेंदुलकर, सड़क को बना दिया मैदान

नई दिल्ली। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर का एक और वीडियो उनकी कश्मीर विजिट का सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। सचिन तेंदुलकर कश्मीर में क्रिकेट खेलते नजर आए। उन्होंने सड़क को ही क्रिकेट का मैदान बना दिया। उनके साथ दर्जनों बच्चे थे, जो वहां क्रिकेट खेल रहे थे। सचिन तेंदुलकर से भी रुका नहीं गया और वे सड़क पर ही क्रिकेट खेलते हुए दिखाई दिए। अक्सर सचिन तेंदुलकर ऐसा करते रहते हैं।सचिन तेंदुलकर हाल ही में एक कश्मीर में एक बैट फैक्ट्री में भी बल्ले देखते हुए नजर आए थे। उनकी बेटी सारी भी उनके साथ थी। सचिन तेंदुलकर ने इसके बाद गुलमर्ग में बच्चों के साथ क्रिकेट खेली। इसी दौरान का एक और वीडियो सामने आया था, जिसमें सचिन तेंदुलकर एक इंडिगो की फ्लाइट में एंट्री करते हैं तो लोग उनके लिए तालियां बजाते हुए नजर आते हैं और सचिन...सचिन...करते सुनाई पड़ते हैं। फिलहाल, आप यहां क्रिकेट खेलने का वीडियो देखिए।बता दें कि सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट छोड़े एक दशक से भी ज्यादा समय हो गया है। सचिन तेंदुलकर अब लीजेंड्स लीग में खेलते हुए नजर आते हैं। आज भी क्रिकेट के मैदान पर सचिन उतरते हैं तो लोग सचिन...सचिन पुकारते नजर आते हैं।

सचिन का क्रेज आज भी इस खेल के दिवानों में कम नहीं है। सचिन भी इस खेल को प्यार करते हैं। यही कारण है कि सचिन तेंदुलकर को वही प्यार फैंस से भी मिलता है।सचिन अक्सर अलग-अलग वीडियो अपने सोशल मीडिया हैंडल्स पर भी शेयर करते रहते हैं। इंटरनेशनल क्रिकेट में 100 शतक जड़ने वाले सचिन तेंदुलकर ने हाल ही में एक वीडियो शेयर किया था, जिसमें एक फैन उनके नाम की जर्सी पहने नजर आया था।

यशस्वी जायसवाल ने 5.4 करोड़ में मुंबई में खरीदा सपनों का घर

कभी टेंट में गुजारते थे रात

नई दिल्ली. भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सितारे यशस्वी जायसवाल ने क्रिकेट के मैदान पर आग लगाई हुई है। महज 22 साल की उम्र में उन्होंने 22 साल के अनुभव वाले जेम्स एंडरसन की धुलाई की। वे इंग्लैंड के खिलाफ जारी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में लगातार दो दोहरे शतक जड़ने में सफल हुए हैं। इस बीच उनसे जुड़ी एक और खबर सामने आई है कि यशस्वी जायसवाल ने मुंबई में करीब साढ़े 5 करोड़ रुपये का एक फ्लैट खरीदा है।

यशस्वी जायसवाल ने एक्स बीकेसी में 5.4 करोड़ रुपये में एक अपार्टमेंट खरीदा है। टीओआई की मानें तो लियासेस फोरास को प्राप्त रजिस्ट्रेशन डॉक्यूमेंट्स के अनुसार, बांद्रा (ईस्ट) भवन के विंग 3 में 1,100 वर्ग फुट का फ्लैट 7 जनवरी को पंजीकृत किया गया था। यह सौदा 48,499 रुपये प्रति वर्ग फुट पर हुआ। इस फ्लैट को खरीदने की बात काफी समय से चल रही थी। टेस्ट डेब्यू के समय ही वे इसमें शिफ्ट को लेकर उत्साहित थे। आपको बता दें, एक समय ऐसा भी था जब वे मुंबई में एक

छोटे बच्चे की तरह आए थे और आजाद मैदान में एक टेंट में रहते थे। वे यूपी के बदोही जिले के एक गांव के रहने वाले हैं। अपने क्रिकेट के सपनों को पंख देने के लिए वे मुंबई आए और उनको वहां एक कोच मिला। इतना ही नहीं, एक समय पर वे एक पानी पूरी बेचने वाले हॉकर की मदद भी करते थे। अक्सर उनकी वह तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती हैं।

पिछले रविवार को बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज ने राजकोट में तीसरे टेस्ट में इंग्लैंड के खिलाफ भारत को 434 रनों से मिली जीत में दोहरा शतक जड़ा। इस दौरान उन्होंने कई रिकॉर्ड तोड़े। वे एक पारी में 12 छक्के जड़ने वाले दुनिया के दूसरे और भारत के पहले क्रिकेटर बने। जायसवाल ने 2020 अंडर 19 विश्व कप से ही अपना दबदबा बनाया हुआ। वे राजस्थान रॉयल्स के लिए आईपीएल खेल चुके हैं। उनको 2.4 करोड़ में टीम ने खरीदा था।

रांची टेस्ट मैच के लिए इंग्लैंड की प्लेइंग 11 का ऐलान, टीम में किए ये 2 अहम बदलाव

नई दिल्ली.एजेंसी

इंग्लैंड की टीम में दो बदलाव देखने को मिले हैं। गुरुवार 22 फरवरी की दोपहर को इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड यानी ईसीबी ने रांची में खेले जाने वाले पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के चौथे मुकाबले के लिए टीम का ऐलान कर दिया है। 2-1 से सीरीज में पिछड़ चुकी इंग्लैंड की टीम में दो बदलाव हुए हैं। मार्क वुड और रेहान अहमद को ड्रॉप किया गया है, जबकि उनकी जगह ओली रॉबिन्सन और शोएब बशीर खेलने वाले हैं। माना जा रहा था कि लगातार तीन मैचों में फ्लॉप रहने वाले जॉनी बेयरेस्टो को ड्रॉप किया जा सकता है और उनकी जगह एक अतिरिक्त स्पिनर या फिर डैन लॉरेंस को खिलाया जा सकता है। हालांकि, टीम मैनेजमेंट, कप्तान और कोच ने अपने अनुभवी बल्लेबाज पर भरोसा जताया है। ऐसे में जॉनी बेयरेस्टो को भी अपना योगदान चौथे मुकाबले में देना होगा, क्योंकि टेस्ट सीरीज में इंग्लैंड की टीम पहले ही पिछड़ चुकी है और एक और हार टीम को सीरीज हरा देगी।

इंग्लैंड की प्लेइंग इलेवन

जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, जॉनी बेयरस्टो, बेन स्टोक्स (कप्तान), बेन फोक्स (विकेटकीपर), टॉम हार्टली, ओली रॉबिन्सन, जेम्स एंडरसन और शोएब बशीर।

क्या श्रेयस अय्यर कर रहे बहानेबाजी? NCA ने बताया फिट, फिर भी नहीं खेल रहे रणजी ट्रॉफी

क्या श्रेयस अय्यर आईपीएल 2024 से पहले बहानेबाजी कर रहे हैं। उनको NCA ने फिट बताया है, लेकिन फिर भी वे रणजी ट्रॉफी का क्वॉर्टर फाइनल मैच मुंबई के लिए नहीं खेलेंगे। उनको बैक पेन कारण बताया है।

नई दिल्ली.

भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने एक दिन पहले मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन को यह सूचना दी है कि वह रणजी ट्रॉफी 2024 के क्वॉर्टर फाइनल्स के लिए उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि उनको पीठ दर्द है। वहीं, नेशनल क्रिकेट एकेडमी यानी एनसीए के हेड ऑफ स्पोर्ट्स साइंस एंड मेडिकल नितिन पटेल ने चयनकर्ताओं को भेजे एक ईमेल में बताया था कि श्रेयस अय्यर फिट हैं और उनको कोई नई चोट नहीं है। ऐसे में उनको खेलने के लिए तैयार रहना चाहिए था। मुंबई क्रिकेट संघ के सूत्रों के मुताबिक, श्रेयस अय्यर ने शुक्रवार से शुरू होने वाले बड़ौदा के खिलाफ रणजी ट्रॉफी क्वॉर्टर फाइनल मैच से बाहर होने का कारण पीठ दर्द बताया था, लेकिन द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, नितिन पटेल ने अपने ईमेल में लिखा,इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के बाद भारतीय टीम की हैंडओवर रिपोर्ट के अनुसार श्रेयस अय्यर फिट थे और चयन के लिए उपलब्ध थे। टीम इंडिया से उनके जाने के बाद फिलहाल किसी ताजा चोट की खबर नहीं है।पिछले सप्ताह बीसीसीआई सचिव जय शाह ने केंद्रीय अनुबंधित और भारत ए क्रिकेटरों को चेतावनी दी थी कि घरेलू क्रिकेट में भाग ना लेने पर इसके गंभीर प्रभाव होंगे। राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने बीसीसीआई की मेडिकल टीम से इनपुट लेने के बाद श्रेयस अय्यर को रणजी ट्रॉफी खेलने के लिए कहा ताकि उनकी पीठ को बल्लेबाजी और लंबे समय तक मैदान पर रहने के तनाव की आदत हो जाए। हालांकि, श्रेयस ने रणजी ट्रॉफी नहीं खेलने के पीछे बैक पेन कारण बताया है।अगले महीने से आईपीएल 2024 की शुरुआत हो रही है। ऐसे में श्रेयस अय्यर शायद उस टूर्नामेंट के लिए फिट रहना चाहते हैं। शायद यही वजह है कि वह पूरी तरह फिट होकर भी रणजी ट्रॉफी में उतरने के लिए तैयार नहीं है। श्रेयस अय्यर चोट के कारण पिछला सीजन कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए नहीं खेल पाए थे। ऐसे में वह चाहेंगे कि इस बार पूरी तरह फिट होकर वह टीम में लौटें और टीम की कप्तानी करें।

बाबर आजम के जबरा फैन ने तोड़ीं सारी सीमाएं, मैदान पर जाकर अपने चहेते बल्लेबाज को किया हग

पाकिस्तानी बल्लेबाज बाबर आजम के एक जबरा फैन ने पीएसएल 2024 के दौरान सारी सीमाएं तोड़ दी। उसने मैदान पर जाकर बल्लेबाज को हग किया। इसके बाद उसे बाबर आजम ने मैदान से बाहर भेज दिया।

नई दिल्ली।

पाकिस्तान के धाकड़ बल्लेबाज बाबर आजम की फैन फॉलोइंग काफी है। जिस तरह विराट कोहली और रोहित शर्मा से मिलने के लिए फैंस मैदान पर पहुंच जाते हैं। उसी तरह बाबर आजम के साथ भी ऐसा होता आ रहा है। पाकिस्तान के इस बल्लेबाज का एक जबरा फैन पाकिस्तान सुपर लीग यानी पीएसएल के दौरान नजर आया।

उस फैन ने सारी सीमाएं तोड़ दीं और वह मैदान पर अपने चहेते क्रिकेटर से मिलने पहुंच गया। दरअसल, पीएसएल के कराची किंग्स बनाम पेशावर जाल्मी मैच के दौरान बाबर आजम जब फील्डिंग कर रहे थे तो एक फैन स्टेडियम से निकला। पहले उसने स्टेडियम और मैदान के बीच में लगीं रैलिंग को क्रॉस किया और फिर एडवरटाइजिंग बोर्ड्स को पार करते हुए मैदान की तरफ दौड़ा। ये शख्स सीधा बाबर आजम की तरफ दौड़ा और बाबर भी रुक गए और उन्होंने अपने इस फैन से मुलाकात की और उसे वापस भेजा।

हैरान करने वाली बात ये रही कि इस फैन को रोकने के लिए कोई भी सुरक्षाकर्मी मैदान की ओर नहीं दौड़ा। इस फैन को उन्होंने वापस आते हुए पकड़ा। भारत में भी कई बार ऐसा हो चुका है, जब कोई फैन जबरदस्ती मैदान में घुस जाता है। हालांकि, अब भारत में नियम इसको लेकर बना दिए हैं और इस तरह की हरकत करने वालों के खिलाफ कार्रवाई होती हैं और उन्हें कुछ दिन हवालात में बंद रखा जाता है।

बाबर आजम की बात करें तो वे पेशावर जाल्मी के कप्तान हैं। दोनों मैचों में एक बल्लेबाज के तौर पर बाबर आजम सफल रहे हैं, लेकिन दोनों मैचों में उनकी टीम को हार का सामना करना पड़ा है।

पहले मैच में क्वेटा ग्लैडिएटर्स से टीम को हार मिली थी, जबकि दूसरे मैच में कराची किंग्स ने बाबर आजम की कप्तानी वाली पेशावर जाल्मी टीम को रौंद दिया। दोनों मैचों में बाबर आजम ने ओपनर के तौर पर अर्धशतक जड़ा।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने किया ग्वालियर केन्द्रीय जेल का औचक निरीक्षण

महेंद्र शर्मा उप संपादक
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शुक्रवार की सुबह ग्वालियर केन्द्रीय जेल का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने जेल की सफाई व्यवस्था और कैदियों के परिजनों की मुलाकात होने में खामियों को लेकर असंतोष व्यक्त करते हुए सुधार के निर्देश दिए और स्वयं साफ-सफाई की।दरअसल ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर शुक्रवार की सुबह अचानक ग्वालियर स्थित केन्द्रीय जेल का निरीक्षण करने पहुंचे। इस दौरान सबसे पहले उन्होंने जेल के बाहर मौजूद जेल में बन्द कैदियों के परिजनों से समस्याओं की जानकारी ली। तदोपरांत जेल के निरीक्षण में केंटीन के अन्दर पानी

की टंकी के समीप गंदगी देख नाराजगी व्यक्त करते हुए स्वयं साफ-सफाई की। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जेल में कैदी को किए गए अपराध का प्रायश्चित करने के लिए दण्ड स्वरूप भेजा जाता है यहां उनके साथ ऐसा व्यवहार करें कि भविष्य में वे एक अच्छे नागरिक बनकर समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकें।
ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने इस अवसर पर जेल में सजा काट रहे कैदियों का भी आव्हान किया कि वह कि पूर्व में आपने भले ही अपराध का रास्ता चुना, लेकिन अब जेल में सजा काटने के बाद एक नागरिक बनकर नया जीवन शुरू करें। उन्होंने कैदियों से कहा कि अपराध के रास्ते पर चलकर आप न केवल अपना भविष्य बर्बाद कर रहे हैं, बल्कि अपने परिवार को भी जिल्लत की ज़िंदगी जीने के लिए मजबूर कर रहे हैं। इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने जेल अधिकारियों को व्यवस्थाओं में सुधार के निर्देश दिए।

हर गरीब एवं जरूरतमंद को शासन की योजना का लाभ मिले: ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत आयोजित शिविर

महेन्द्र शर्मा उप सम्पादक
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर दिनांक 23 फरवरी 2024- विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत आयोजित शिविर में ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेकर हम स्वयं जरूरतमंद, गरीब, शोषित एवं पीड़ित लोगों के बीच पहुंच रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य हर गरीब व जरूरतमंद को योजनाओं का लाभ मिले इसके लिए आयोजित इन शिविरों के माध्यम से हम जन जन तक पहुंचकर उन्हें योजनाओं का लाभ प्रदान कर रहे हैं। शिविर में उज्जवला योजना, आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री आवास, पीएम स्व निधि सहित विभिन्न योजनाओं का लाभ एक ही छत के नीचे मिल रहा है। शिविर में मंडल अध्यक्ष श्री प्रयाग तोमर, श्री आकाश श्रीवास्तव,पार्षद श्रीमती रेखा राय, श्री नत्थू सिंह, पार्षद श्री मनोज यादव, श्री शशि शर्मा, श्री अजीत किरार, श्रीमती शकुंतला परिहार, श्री शैलू चौहान सहित बडी संख्या में हितग्राही उपस्थित रहे।
शिविर में ग्वालियर के क्षेत्रीय कार्यालय क्रमांक 01 के अंतर्गत वार्ड नंबर 4 में काली माता मंदिर के पास एवं क्षेत्रीय कार्यालय क्रमांक 07 के अंतर्गत वार्ड नंबर 02 में घोसीपुरा रेलवे स्टेशन के पास शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें काली माता मंदिर के पास आयोजित शिविर में 4846 हितग्राहियों एवं घोसीपुरा रेलवे स्टेशन के पास शिविर में 4303 हितग्राहियों को लाभ मिला। शिविर में ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने उज्ज्वला योजना एवं आयुष्मान कार्ड योजना के हितग्राहियों को हितलाभ वितरण किया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत शिविर के माध्यम से विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया गया। जिसमें पीएम स्व निधि, पीएम आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, अमृत योजना, पीएम मुद्रा लोन, पीएम विश्वकर्मा योजना, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, पीएम उज्जवला योजना, आयुष्मान भारत योजना, पीएम जन औषधि जन योजना, उजाला योजना, सौभाग्य योजना एवं खेलो इंडिया के तहत हितग्राहियों को हितलाभ प्रदान किया जाएगा। इसके साथ ही शिविर स्थल पर स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया जाएगा। आप अपने क्षेत्र के शिविर में शामिल होकर विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने आज दोनों शिविरों में आम जन को स्वछता की शपथ दिलाई और कहा 29 फरवरी को हजीरा स्थित इंटक मैदान में उज्जवला योजना का बड़ा शिविर लगाया जाएगा!

24 को विभिन्न स्थानों पर आयोजित होंगे शिविर -भारत विकसित संकल्प यात्रा के द्वारा आज इन स्थानों पर कैंप आयोजित किए जाएगें। जिसमें दिनांक 24 फरवरी 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय क्रमांक 05 के अंतर्गत वार्ड नंबर 17 में आरामिल रोड पर एवं क्षेत्रीय कार्यालय क्रमांक 20 के अंतर्गत वार्ड नंबर 48 में मामा के बाजार में बर के पेड़ के पास शिविर का आयोजन किया जाएगा।

ग्वालियर मै होगा पेंशन का राष्ट्रीय सेमीनार,संसद भवन घेराव पर होगा विचार-जनक सिंह रावत

डॉ.मंजीत पटेल होंगे मुख्य अथिति शिवपुरी से जाएंगे सेंकड़ो कर्मचारी

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर- पुरानी पेंशन का राष्टीय सेमिनार 24 फरवरी को मानस भवन फुलवाग ग्वालियर में होगा फेडरेसन के राष्टीय सचिव एवं राष्टीय मीडिया प्रभारी जनक सिंह रावत ने प्रेस को दी गई विज्ञप्ति में बताया गया कि ऑल इंडिया एन.पी.एस. एम्पलाइज फेडरेशन एवं राज्य शिक्षक कांग्रेस के संयुक्त तत्वाधान में मानस भवन फूल बाग में पुरानी पेंशन सेमिनार में फेडरेशन के राष्टीय अध्यक्ष मनजीत सिंह पटेल दिल्ली, उत्तर प्रदेश प्रदेश अध्यक्ष क्रांति सिंह,दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष विनोद यादव, संगठन के राष्टीय महासचिव सुधीर रूपजी, राज्य शिक्षक कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राकेश नायक कार्यकारी प्रांत अध्यक्ष राजीव पाठक की उपस्थिति में सेमिनार का आयोजन किया जाएगा पुरानी पेंशन की मुहिम को राष्ट्रव्यापी एवं संसद भवन घेराव के लिए रणनीति पर विचार होगा जिसमें जिले सहित संभाग के सैकड़ो कर्मचारी उपस्थित रहेंगे संगठन सभी कर्मचारियों से अपील करता है अधिक से अधिक संख्या में राष्टीय अध्यक्ष मनजीत सिंह पटेल एवं मुख्य वक्ता क्रांति सिंह उद्बोधन देंगे संगठन के जनक सिंह रावत, बालू राम रावत, वीरेंद्र सिंह रावत, वीरेंद्र शिवहरे,वीरेंद्र रावत,विनय सिंह रावत, सुल्तान सिंह आदिवासी, सुरेश सिंह रावत,गिर्राज शुक्ला सहित अन्य कर्मचारियों द्वारा अधिक से अधिक संख्या में ग्वालियर पहुंचने की अपील की गई है

किसानों पर दमन के खिलाफ़,ग्वालियर में जलाए गए पुतले ,26 को सड़को पर ट्रैक्टर भी निकलेंगे

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर- किसान आंदोलन पर पुलिस द्वारा किए जा रहे हैं दमन और किसानों की हत्या किये जाने के विरोध में आज पूरे देश भर में संयुक्त किसान मोर्चे के द्वारा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, हरियाणा के मुख्यमंत्री खट्टर एवं गृहमंत्री अनिल विज के पुतले जलाकर विरोध दर्ज कराया गया इसके तहत आज 6 नंबर चौराहा मुरार में पुतला दहन हुआ ग्वालियर संयुक्त किसान मोर्चा ने यह भी ऐलान किया है कि 26 फरवरी को होने वाले ट्रैक्टर परेड में ग्वालियर में भी बड़ी संख्या में सड़को पर ट्रैक्टरों निकाले जायेंगे। मोती झील पर भी किसानों ने बैठक करके विरोध व्यक्त किया। किसान मोर्चा ने ऐलान किया है कि जब तक किसानों के साथ सोहार्द पूर्ण वातावरण सरकार बात नहीं करती, एमएसपी की गारंटी नहीं देती, किसान पेंशन प्रतिमाह 5000 नहीं करती, तब तक यह विरोध जारी रहेगा। आज पुतला दहन मे अखिलेश यादव, रामविलास गोस्वामी, अशोक पाठक, भगवान् सिंह गुर्जर, रणवीर सिंह यादव, राय सिंह, पूरन सिंह राणा, रामकिशन सिंह कुशवाह, नारायण प्रसाद, राजेश सिंह, पीपी शर्मा, तलविंदर सिंह, रफीक खान, अवतार सिंह, राजू सिंह, गुरदीप, मातादीन धनावत, जसविंद सिंह, आदि शामिल थे

पांच हजार मंचों पर बजा चुके है शंख, बिना रुके 24 मिनट शंखनाद करने का रिकॉर्ड

अनियंत्रित खानपान और व्यायाम का अभाव कम उम्र में मधुमेह के बड़े कारणदरअसल मेरा बचपन से मन कुछ अलग करने का था, जिसके लिए मैंने प्रयास किया और सफल हुआ। मैंने जब इंटरनेटमीडिया पर अपनी गतिविधि डाली तो लोगों ने एप्रोच किया और शंख बजाना सीखा। कोरोना काल में ढाई हजार लोगों ने आनलाइन सीखा शंख बजानाशंख शरीर के लिए फायदेमंद है। यह फेफड़ों को तंदुरुस्त रखता है।यही कारण है कि देशभर के लोगों ने मुझसे आनलाइन शंख बजाना सीखा और उसकी वह निरंतर प्रैक्टिस कर रहे हैं। मैं भी रोज दो बार शंख बजाने की प्रैक्टिस करता हूं।विक्रम ने बताया कि शंख बजाने से सांस लेना, छोड़ना और रोकना तीनों क्रियायें होती हैं, जो शरीर के लिए उपयोगी है। कोरोना काल में ढाई हजार लोगों ने मुझसे आनलाइन शंखनाद सीखा, इनमें डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, एक्टर, रंगकर्मी आदि शामिल थे।

बेकाबू हुआ फंगल इंफेक्शन, दवाएं बेअसर, 250 मरीज रोज पहुंच रहे

ग्वालियर(नप्र)। शहर व आसपास के क्षेत्रों में फंगल इंफेक्शन के मरीज लगातार बढ़ रहे हैं। डाक्टर के पास पहुंचने वाले हर 400 में से 200 मरीज इससे पीड़ित हैं। एक हजार बिस्तर अस्पताल (जेएएच) के चर्म रोग विभाग की ओपीडी में रोजाना 250 से ज्यादा मरीज इसी बीमारी के आ रहे हैं। यह बीमारी बेशर्म होकर लौटी है। इसपर दवाओं का असर कम हो रहा है। ऐसे में इलाज का समय और दवाओं का डोज दोगुना करना पड़ा है। विशेषज्ञों का कहना है कि इसकी रेमेडी को लेकर देशभर के डाक्टर परेशान हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि फंगल इंफेक्शन के मरीजों को लंबे समय तक दवाओं का उपयोग करना पड़ रहा है। आमतौर पर एक से डेढ़ माह में ठीक होने वाला मरीज तीन से छह माह ले रहा है। उदाहरण के तौर पर पहले 250 एमजी की टेबलेट में काम हो जाता था, लेकिन अब 500 एमजी की दवा देना पड़ रही है, इसका प्रमुख कारण बीच-बीच में दवाएं बंद कर देना, स्टेराइड का अधिक उपयोग करने के साथ-साथ दवाओं के प्रति रजिस्टेंट पावर विकसित होना है। विशेषज्ञों का कहना है कि फंगल इंफेक्शन होने पर डाक्टर की सलाह पर ही दवा लें, स्टेराइड का उपयोग न करें।

मेडिकल स्टोर, झोलाछाप से ले रहे दवाएं-शुरुआत में लोग इसे मामूली खुजली समझकर मेडिकल स्टोर या झोलाछाप डाक्टर से दवा ले लेते हैं। खुजली मिटाने के लिए बाजार में जो क्रीम या आइनमेंट मिल रहे हैं वह शुरू में खुजली को कम कर देते हैं, लेकिन यह दोबारा हो जाती है। इनमें स्टेराइड होता है। एक बार स्टेराइड लग जाने पर यह चमड़ी को पतला कर देता है और चमड़ी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। ऐसे बचें बीमारी से- शरीर के किसी भी हिस्से में नमी नहीं होने दें, सफाई रखें, हर चीज का अलग-अलग उपयोग करें, संक्रमित होने पर पूरा इलाज कराएं। अगर घर में सभी को इंफेक्शन हो तो सभी का एक साथ इलाज कराएं। कड़क धूप में सूखे कपड़े पहनें। विशेषज्ञ डाक्टर से इलाज करवाएं।

लोहिया बाजार में सड़क चौड़ीकरण के लिए अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई कोर्ट ने सही मानी

ग्वालियर । जिला अदालत में चल रहे लोहिया बाजार की शासकीय जमीन के विवाद में दस साल बाद फैसला आया है, जिसमें फैसला शासन के पक्ष में हुआ है। यहां लोहिया बाजार में रहने वाले श्यामबाबू गोयल ने कोर्ट में दावा किया कि शासन ने सड़क चौडीकरण के नाम पर उनके घर का आगे का हिस्सा अवैध रूप से तोड़ दिया है, जबकि उसका मालिकाना हक आवेदक के पास है।सुनवाई के दौरान शासकीय अधिवक्ता घनश्याम मंगल ने तथ्यों के आधार पर कोर्ट में साबित किया कि जमीन का वह हिस्सा शासन का है और संबंधित वादी ने उस पर अवैध रूप से अतिक्रमण कर रखा था। इन तथ्यों को लश्कर सिटी के तहसीलदार रमाशंकर सिंह ने भी सत्यापित किया। सभी तथ्यों का आंकलन करने के बाद कोर्ट ने पाया कि वादी न तो उक्त जमीन के हिस्से पर अपना मालिकाना हक साबित कर पाया और न किसी प्रकार का कब्जा । कोर्ट ने सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए अपना फैसला सुनाया और शासन के पक्ष में फैसला दिया। दरअसल, जिस दौरान ग्वालियर के कलेक्टर आकाश त्रिपाठी हुआ करते थे उस समय लोहिया बाजार के सड़क चौड़ीकरण का काम शुरू हुआ था।इस मामले के वादी के घर की बालकनी का हिस्सा अवैध निर्माण के रूप में पाया गया तो प्रशासन ने उसे हटाने के लिए वादी को नोटिस जारी किया। लेकिन इस नोटिस पर वादी ने कोई कार्रवाई नहीं की। इसको लेकर उसने एक दीवानी दावा दायर कर दिया और स्टे ले लिया, लेकिन प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए अवैध हिस्से को तोड़ दिया। इस पर संबंधित वादी ने कोर्ट में दावा कर दिया कि वह उसके स्वामित्व की जगह है जिसे प्रशासन ने अवैध रूप से तोड़ दिया है। मामले की सुनवाई के दौरान इस बात को वादी साबित नहीं कर सका जिसके बाद कोर्ट ने उस मामले में अपना फैसला सुना दिया।

मप्र पर्यटन निगम को मिला बेस्ट स्टेट टूरिज्म बोर्ड का अवॉर्ड

मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार, नवाचार करने, पर्यटकों को अनुभव आधारित पर्यटन प्रदान करने एवं पर्यावरण अनुकूल पर्यटन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए मध्य प्रदेश पर्यटन निगम (एमपीटीबी) को राष्टीय स्तर पर सम्मानित किया गया। ग्रेटर नोएडा में आयोजित हुई देश की प्रमुख ट्रेवल प्रदर्शनी एसएटीटीई (साउथ एशियन ट्रेवल एंड टूरिज्म एक्सचेंज) में एमपीटीबी को 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट बोर्ड' का अवॉर्ड दिया गया है। पर्यटन और संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव एवं मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक शिव शेखर शुक्ला ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि पर्यटन विभाग सदैव ही प्रदेश में भ्रमण के लिए पहुंचने वाले पर्यटकों की सुलभता, सुगमता एवं सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। विभिन्न नवाचर एवं पहलों के माध्यम से अधिक से अधिक पर्यटक %हिंदुस्तान के दिल% को देखने के लिए पहुंचे, ऐसा प्रयास रहता है। बोर्ड की ओर से यह सम्मान उप संचालक युवराज पडोले ने ग्रहण किया। बता दें, तीन दिवसीय प्रदर्शनी में बोर्ड ने प्रमुखता से सहभागिता कर देश एवं विदेशों से आए ट्रेवल एजेंट्स, टूर ऑपरेर्ट्स, होटेलियर्स एवं विभिन्न हितधारकों के समक्ष प्रदेश के पर्यटन स्थलों एवं उत्पादों को प्रचारित किया। एमपीटीबी स्टॉल पर आगंतुकों को सांची, अमरकंटक, नर्मदा के घाटों और अन्य गंतव्यों के वर्चुअल टूर का अनुभव करने का भी मौका मिला। बोर्ड को यह सम्मान पर्यटन, बुनियादी ढांचे के विकास, स्थानीय समुदाय के आर्थिक विकास, राज्य की संस्कृति और विरासत के संरक्षण इत्यादि क्षेत्र में उच्च स्तरीय प्रदर्शन के आधार पर दिया गया है।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478